9848

तित्थयर

॥ जैन भवन ॥

वर्द्धमान महावीर माता त्रिशला की गोद में

वर्ष : २७ अंक : ६ सितम्बर : २००३

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कमास्त्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Ground-nut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant	**Registered Office**	**Executive Office**
Post Box No. 5	143, Cotton Street	2, India Exchange Place
Lucknow Road	Kol - 700 007	Kolkata - 700 001
Sitapur - 2261001 (U.P.)	Ph: 2238-4329/	Ph: 22201001/9146/5055
Ph: 242017/42397/42073	8471/5738	Telex: 217149 SOIN IN
(05862)	Gram - Sethia Meal	FAX: 22200248 (033)
Gram - Sethia - Sitapur		
Fax: 242790 (05862)		

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २७ अंक - ६, सितम्बर २००३

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone : 2268-2655, e-mail : jbhawan@vsnl.net

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three years : Rs. 160.00, US$ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 2268-2655 and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street Kolkata - 700 007 Phone : 2241-1006

संपादन
श्रीमती लता बोथरा

॥ जैन भवन ॥

Jainology and Prakrit Research Institute
Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007.
Phone-2238-2655. e-mail - jbhawan@vsnl.net

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	भगवान् महावीर और औषधि विज्ञान	मुनि दर्शन विजयजी	३११
२.	कर्म की कहानी	पन्यासप्रवर श्री सुयश मुनि जी	३२२
३.	श्री चन्द्रराज चरित्र		३३६
४.	समाचार सार		३४६
५.	संकलन		३४७

कवरपृष्ठ : स्वर्गीय हीराचन्द दुगड़ द्वारा चित्रित एवं श्री जयन्त दूगड़ के सहयोग से प्राप्त चित्र में भगवान् महावीर माता त्रिशला की गोद में।

Composed by:
Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

भगवान् महावीर और औषध विज्ञान

मुनि दर्शन विजयजी

नमो दुर्वार रागादि वैरिवार निवारिणे ।
अर्हते योगिनाथाय, महावीराय तायिने ।।१।।

भारत के धर्मों में जैन धर्म ही एक ऐसा धर्म है जो कि माँसाहार का सर्वथा निषेध करता है। जैन धर्म के अंतिम तीर्थंकर भगवान् महावीर बड़े तपस्वी थे, अहिंसा की साक्षात् मूर्ति थे उनकी मौलिक अहिंसा से उनके शासन में प्रवेश करने वाला इतना प्रभावित होता था कि वह माँस भक्षण का पूर्ण रूपेण त्याग कर देता था। इस कथन के समर्थन में अनेक दृष्टाँत जैन आगमों व बौद्ध त्रिपिटकों में पाये जाते हैं। यह स्पष्ट होने पर भी आजकल एक अजीव आपत्ति उठाई जा रही है कि भगवान् महावीर ने मांसाहार किया था। इस विचित्र कल्पना का निरसन करना वास्तविकता की स्थापना करना ही नहीं, वरन् एक आवश्यकता की पूर्ति करना है। विषय का वास्तविक वर्णन भगवती सूत्र के पन्द्रहवें शतक में है। उसका सार निम्न है :—

जिस समय भगवान् महावीर मेंढ़िक ग्राम के शाल कोष्ट उद्यान में पधारे, उस समय उनके शरीर में तेजो लेश्या की ऊष्णता से उत्पन्न पित्त-ज्वर का जोर था, रक्त-अतिसार हो रहा था। रोग ने भयंकर रूप धारण किया हुआ था। ऐसी स्थिति को देखकर परमतावलम्बी कहने लगे कि भगवान् महावीर की छः मास की छद्मस्थ अवस्था में ही मृत्यु हो जायेगी। भगवान् का परम अनुरागी मुनि सिंह को, जो कि मालुका वन में तपस्या कर रहा था, जब इस लोक चर्चा का पता चला तो वह बहुत क्षुब्ध हुआ और अपने मन में इस बात की कल्पना करके कि कहीं पर मतावलम्बियों का कथन सच न हो जाये, रूदन करने लगा। भगवान् ने तत्काल मुनि सिंह को बुला कर कहा-वत्स सिंह! तू दुःखी मत हो, मेरी मृत्यु छः महीने में नहीं होगी। मैं १६ वर्ष तक तीर्थंकर की अवस्था में जीवित रहूँगा। तथापि, यदि मेरे इस रोग से तुझे दुःख होता है तो एक काम कर। इस मेंढिक ग्राम में गाथापति की पत्नी रेवती रहती

है। उसके वहाँ चला जा। उसने मेरे निमित्त जो औषधि बना कर तैयार रखी है, उसे नहीं लाना। केवल उसके वहाँ रखी पुरानी औषधि ले आना। मुनि सिंह भगवान् की आज्ञा पाकर आनन्दित होता हुआ रेवती के घर गया और औषध ले आया। औषध-सेवन से भगवान् का रोग शांत हो गया।

उक्त औषध के लिये प्राकृत भाषा में इस प्रकार लिखा है :—

तत्थणं रेवती ए गाहावइणीए, मम अट्ठाए दुवे कवोय सरीरा उवखड़िया, तेहिं नो अट्ठों। अत्थि से अन्ने पारियासिए मज्जार कडुए कुक्कुड़मंसए तमाहराहि एएणं अट्ठो।

—भगवती सूत्र पन्द्रहवां शतक।

इस पाठ के प्रत्येक शब्द की व्याख्या की जायेगी। किन्तु इस सम्बन्ध में यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि २५०० वर्ष पूर्व भगवान् महावीर द्वारा भाषित मागधी-प्राकृत के इन शब्दों के अर्थ या भावार्थ को अनेक प्रकार से संस्कारित स्वकालीन प्रचलित भाषा के शब्दों का पर्याय बना लिया जाय तो यह सरासर भूल है। ऐसी भूल से बचने के लिये प्रारम्भ में निम्न बातों का ज्ञान होना आवश्यक है।

१) जैन सूत्रों की रचना और अर्थ-पद्धति,
२) प्राकृत और संस्कृत के अनेकार्थ शब्द,
३) वर्तमान काल के कुछ अनेकार्थ शब्द,
४) औषध सेवन करने वाले और जुटाने वाले का जीवन-संस्कार,
५) औषध प्रदान करने वाली स्त्री का व्यवहारिक जीवन ;
६) रोग, औषध और नियमा नियम का विज्ञान।

(१) जैन सूत्रों की रचना और अर्थ-पद्धति

जैन आगमों की रचना और अर्थ शैली का इतिहास इस प्रकार मिलता है :—

इह चार्थतोऽनुयोगो द्विधा, अपृथक्त्वाऽनुयोगः पृथक्त्वाऽनुयोगश्च। तत्राऽपृथक्त्वाऽनुयोगो, यत्रैकस्मिन्नेव सूत्रे सर्वे एव चरण करणादयः प्ररूप्यन्ते, अनन्तगम पर्यायार्थकत्वात् सूत्रस्या। पृथकत्वाऽनुयोगश्च यत्र क्वचित् सूत्रे चरण करणमेव, क्वचिन्पुनधर्मकथेव वेत्यादि। अनयोश्च वक्तव्यता।

जावंति अज्जवइरा, अज्जपुहुत्त कालियाणु ओगस्सा।
तेणारेण पुहुत्तं कालियसुय दिट्ठि वाए य ।।७६२।।

(आ० श्री हरिभद्र सूरि कृत दशवैकालिक सूत्र टीका)

अर्थः आर्यवज्र स्वामी (विक्रम सं० १७४) तक जिनागम के अपृथक्त्व यानि चार चार अनुयोग होते थे। गमा, पर्याय और अर्थ अनन्त होते थे, सामान्य व विशेष, मुख्य व गौण तथा उत्सर्ग व अपवाद द्वारा सापेक्ष अनेक अर्थ होते थे। इनके पश्चात् आर्यरक्षित सूरि से जिनागम का पृथकत्व अनुयोग अथवा धर्मकथा अनुयोग ऐसा एक एक ही अर्थ रहा।

आवश्यक निर्युक्ति गाथा ७६२-७६३ में भी यही उल्लेख है। कहने का अभिप्राय यह है कि एक एक अनुयोग वाला अर्थ शेष रहने के कारण किसी-किसी स्थान पर यदि अर्थ-भ्रम दृष्टिगोचर हो तो वह संभव है। इस अर्थ-भ्रम को दूर करने कि लिए तत्कालीन अर्थ शैली का ज्ञान होना चाहिए और ग्रन्थकार के वास्तविक मन्तव्य को समझना चाहिये।

(२) प्राकृत और संस्कृत भाषा के अनेकार्थ शब्द

प्राकृत और संस्कृत भाषा में वनस्पतियों के कई ऐसे नाम है जिनसे सामान्यतः विभिन्न प्राणियों का बोध होता है। जैसे :—

बिल्ली (गा० १९), ऐरावण (२१), गयमारिणी (२२) पंचांगुली (२६), गोवाली (२९), बिल्ली (३७), मंडुक्की (३८), लोहिणी (अस्सकर्ण्णि, सीह कन्नी, सिंउढि, मुसुढि) (४३), विराली (४४) चण्डी (४६) भंगी (४७)

(पन्नवणा सूत्र पद १ सू० २३-२४)

अस्स कर्ण्णी, सीह कण्णी, सीऊंढि, मूसुंढि।

(जीवाभिगम सूत्र प्रति० १ सू० २१ पृ २७)

एरावण = लकुचफल। मंडुकी (गु०) कोली।
रावण = तंदुक फल। पतंग (हिन्दी) अहुआ (गु० महुड़ा)।
तापसप्रिया = अंगूर-दाख। कच्छप = नंदिजीणी दरखत।
गेजिह्वा = गोभी। मांसल = तरबूज।
बिम्बि = कंडूरी का साग। चतुष्पदी = भिन्डी

(जै० स० प्र० क० ४३)

मार्जारि = कस्तूरी। मृगनाभि = मुश्क। हस्ति = तगर (पृ० २८)
अंडा = आँवला (पृ० १०६)। मर्कटी, वानरी = कौंच (३४३)

वन शुकरी = मुंडी (४११), कुकड़ बेल = गुजराती औषधि (४५६)
लाल मुर्गा = हिन्दी औषधि (५०१), चतुष्पद = भिण्डी (८८९)
मांसफल = तरबूज (९०३)

(शालिग्राम निघण्टु भूषण - ६)

मार्जार = पित्तज्वर नाशक औषधि (शब्द सिधु कोष पृ० ८१७)
रंभा = केले का पेड़, मरकटतंतु (मकड़ी) = अमरबेल (शब्द कोश)
लक्ष्मण = प्रसर कटाली, जड़, राम = चिरायता
लक्ष्मी = कालीमिर्च, दास = हल्दी
सीता = मिश्रीं, पार्वती = देशी हल्दी
ब्रह्मा = पलास पापड़ा, विभिषण = वरकुल मूल
विष्णु = पीपल, रावण = इन्द्रायण तुहरा
शिव = हरड़, महामुनि = अगस्त छाल
अर्जुन = अर्जुनछाल, चन्द्र = बावची
पद्मनाभ = लकड़ी जाति, सूर्य = आक
कृष्ण = गजपीपल, रमा = रमा शीतल मिर्च

(अष्टाभिधान शब्द कोश)

भाव प्रकार निघण्टु में प्राणी वाचक और प्राणी नाम सूचक अनेक वनस्तपतियों का वर्णन है जिनमें से कतिपय ये हैं :—

(१) हरितक्यादि वर्ग में — हरितकी, जीवन्ती = अस्थिमती, पूतना (६ से ११) वैदेही, पिप्पली, (५३) गजपिप्पली (६७) चित्रको व्याल (६९) अजमोदा, खराश्वा, च मायुरो (७७) वचा गोलोमा (१०१) वंशलोचना, वैष्णवी (११७) ऋषभो, वृषभो धीरो, विषाणी न् द्राक्ष (१२५) अश्वगन्धा (१४३-४५) ऋद्धि वृद्धि वाराही (१४३-१५५) कटवी, अशोका मत्स्यशकला, चक्राँगी, शकुलादनी मत्स्यपित्ता (१५४) इन्द यवं, क्वचिदिन्द्रस्य नामैव भवेत्तदभिधायकं (१६०) नाकुलो (१९८) मयूर बिदला, केशी (१७०) कांगुनी, पारापतपदी (१७४) श्रृंगी (२१४) मातुलानी, मादनी, विजया, जया (२३३), स्वर्जिका क्षार, कापोत (२५२)

(२) कर्पूरादि वर्ग में—पतंग (१८-१९), जटायु, कौशिक (३२) नाग (६९) गोरोचना, गौरी (७९) जटामांक्षी, तपस्विनी, (८९) पियुंग, विश्व सेनाँगनां (१०१) रेणुका राजपुत्री च नन्दिनीकपिला द्विजा, पाडु पुत्री कौन्ती

(१०४) काक पुच्छ (१०७) कुककुरं रोम शुकं (१०९) निशाचरो, धनहरः कितवो (१११) ब्राह्मणी देवी मरून्माला (१२५) कपोतचरणा नटी (१२९)

(३) गडूच्यादि वर्ग में :– जीवंती (७) नागिनी (१०) जया, जयन्ती (२४) सिंह पुच्छी (३४) सिंही (३६) व्याघ्री (३८) गोक्षुर : अश्वदंष्ट्रा (४४-४५) जीवंत जीवनी, जीवा, जीवनीया (५०) हय पुच्छिका (५५) व्याघ्र पुच्छः (६१) सिंह तुण्डः वज्री (७५) मातुलः (८७) सिंहिका सिंहास्यो वाजिदन्त (८९-९०) विष्णुकान्ता अपराजिता (१२३) कर्कटी वायसी, करंजां (१२५) काकादनी (१२८) कपिचच्छूः मर्कटी लाँगुली (१३०,१३१) मांस रोहिणी (१३३) मत्स्य निषूदन (१३५) लक्ष्मण (१४१) काकायु (१४६) गौलोमी (१४९) मत्स्याक्षी-शकुलादनी (१७४) वाराही कौष्ट्री, (१७६-१७८) नारायणी (१८२) अश्वगंधा, ह्वया हया, बाराह कर्णी (१८७) वाराहांगी (१९६) जयपाल (२००) ऐन्द्री (२०१) मुन्डी भिक्षुरपि प्रोक्ता श्रावणी च तपोधना, महा श्रवणिका तपस्विनी (२१४-२१६) मर्कटी (२१९) कोकी, लाक्षास्तु काकेक्षु : (२२४)भिक्षु (२२५) अस्थि श्रृंखला (२२६) कुमारी गृहकंन्या च कन्या घृत कुमारिका (२३२) कृष्ण बालः कुमारी राज बलाः (२३८) श्यामा गोपी गोप कन्या (२४०-२४१) देवी गोकर्णी (२४८-२४९) काका वायसी (२५०) काकनासा तु काकांगी, काकतुण्डफला च सा (२५२) काकजंघा परापत पदी दासी काका (२४५) राम दूतिका (२५६) हंसपादी हंसपदी (२६०) द्विज प्रिया (२६१) वन्दा (२६५) मोहिनी रेवती (२६६) मत्स्याक्षी, वाल्हीकी, मत्स्यगन्धा, मत्स्यादनी, (२७०) सर्पाक्षी (२७१) शिवा (२८०) मण्डूकपर्णी, मण्डूकी (२९९) गोजीव्हा (३००) सुदर्शना (३१२) आखुकर्णी (३१३) मयुरशिखा (३१५)

(४) पुष्पवर्ग में पद्मिनी (७) पद्मा (१५) महाकुमारी (२२) नैपाली (२३) गणिका (२८) पाशुपत, बक (३३) कुब्ज (३६) माधवी (४०) नट (४७) सहचर दासी (५०-५१) प्रति विष्णु (५४) बन्धुजीव (५६) मुनिपुष्प, मुनिद्रुम (५९) गौरी (६१) फणी (६४) मुनिपुत्र, तपोधन, कुलपुंत्र (२६६) बर्बरी (६८)

(५) फलवर्ग में :– कामांग (१) कामराज पुत्र (२२) रम्भा (३१) दन्तशठ (६०-१३४-१४०) (वानप्रस्थ (९४) गोस्तनी (११०)

(६) वटादि वर्ग में :— जटी (११) अश्वकर्ण (१९२०) अजकर्ण (२१) अर्जुनवीर (२६-२७) गायत्री, यज्ञियः (३०-३१) पुत्र जीव (३९-४०) कच्छप (४४) याज्ञिक (४८) कुमारक (६२) लक्ष्मी (६८) नेमी (७१)

(७) शाक वर्ग में :— शफरी (२४) कुक्कुटः शिखी, (३०) गोजिब्हा (३९) वाराही (१०७)

अनेकार्थ वर्ग में :— अजश्रृंगी, मेष श्रृंगी, कर्कट श्रृंगीच, ब्राह्मी--ब्राह्मणी, भाण्डी स्पृक्काच। अपराजिता = विष्णु कान्ता, शालपर्णीच, पारातपदी, ज्योतिष्मती काक जंघा च। गोलोमी = श्वेत दुर्वा वचा च। पद्मा = पद्म चारिणी, भाण्डी च श्यामा सारिवा प्रियंगुश्च। ऐंन्द्री = इन्द्र वारुणी, भाण्डी च श्यामा सारिवा प्रियंगुश्च। चर्मकषा = शातला, मांस रोहिणी च। रूहा = दुर्वा = माँसरोहिणी च। सिंही = वृहती वासा च। नागिनी = तांबुली, नाग पुष्पी च। नटः = श्यो नाकः अशोकश्च। कुमारी = घृत कुमारिका शत पत्री च। राजपुत्रीका = रेणुका जाती च। चन्द्र हासा = गडूची लक्ष्मणा च। मर्कटी = कपि कच्छूः अपामार्ग : करेजी च। कृष्णा = पिप्पली, कालाजांजी, नीली च। मंडूक पर्ण = श्योनाकः मंजिष्ठा, ब्रह्ममंण्डू की च। जीवंती = गडूची, शाक भेदः वृन्दा च। वरदा = अश्वगंधा, सुवर्चला वाराही च। लक्ष्मी = ऋद्धिः वृद्धिः शमी च। वीरः ककुभः वीरणम् काकोली च शरश्च। मयूरः = अपामार्गः अजमोदा तुत्थं च। रक्त सार = पतंग आदि। बदरा, = वाराही, आदि। सुवहा = नाकुली आदि। देवी स्पृक्का मूर्वा कर्कोटी च। लांगली = कलिहारी जलपिप्पली, नारिकेलश्च विशल्या च। चंद्रिका = मेथी, चन्द्र शूरः श्वेत कण्टकारी च।

अक्ष शब्दः स्मृतोष्टसु ।।१।।
काकाख्यः काकमाची च काकोली काकणन्तिका।
काकजंघा काकनासा काकोदुम्बरिकापि च ।।२।।
सप्तस्वर्थेषु कथितः काकशब्दो विचक्षणैः। ।।२।।
सर्पद्विरदमेषेषु, सीसके नागकेसरे।
नागवल्यां नागदन्त्यां नागशब्दश्च युज्यते।।३।।
रसो नवसु वर्तते ।।४।।

चन्द्रलेखा = बकुची इश्वरम् = पित्तल अश्वकर्ण = ईसबगोल फणी=श्वेतचन्दन पातालनृप = सीसा लक्ष्मी = लोहा हरि = गुलाल पुरुष

= गुगल माद्री = अतीस नागार्जुनी = दुद्धी, कद्दू बहुपुत्रा = यवासा राक्षसी = राई शतसुधा = शतावर मुकुन्द = कुन्दरू कुमारी = घीगुवार महाबला = सहदेई शकारि = कचनार रक्तबीज = मूंगफली मुंड = सरकंडा लाँगली = कलिहारी तरुण = एरण्ड चंडालिनी = लहसुन उरग = सीसा कृष्णबीज = कालादाना ताम्रकूट = तमाखू

३. वर्तमाल काल के कुछ अनेकार्थ शब्द

आज कल के भी कई प्रचलित शब्द ऐसे हैं जिनका अर्थ, प्राणी और वनस्पति के प्रसंग में प्रयोग होने पर, विभिन्न हो जाता है। जैसे :—

शब्द	प्राणी बोधक अर्थ	वनस्पति बोधक अर्थ
कुकड़ी	मुर्गी (गुजरात)	भुट्टे
गलगल	गुट्टार पक्षी	बिजौरा
चील	चील पक्षी (उत्तर प्रदेश)	चील की भाँजी
गील्होड़ी	गिलहरी (उत्तर प्रदेश)	शाक
कवेला		सफेद कोला (पेठा)
पोपटा	वीभत्स अंग (मालवा)	हरा चना (गुजरात)
लज्जालु	स्त्री छुइमुई, पौधे की जाति (गुजरात)	

४. औषध सेवन करने वाले और जुटाने वाले का जीवन-संस्कार

इस औषध को लाने की आज्ञा देने वाले भगवान महावीर है और लाने वाले पंचमहाव्रत धारक महातपस्वी मुनि श्री सिंह है जो मनसा वाचा कर्मणा हिंसा के विरोधी हैं। वे अहिंसा के महान उपदेशक हैं तथा स्वयं उस पर आचरण करते हैं। यदि उपदेशक किसी सिद्धान्त की प्ररूपणा करे किन्तु उसे अपने आचरण में न उतारे तो उस सिद्धान्त का जनसामान्य पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। (गौतम बुद्ध ने अहिंसा के सिद्धान्त का तो प्रचार किया, किन्तु स्वयं ने माँसाहार का त्याग नहीं किया। फलतः आज भी बौद्ध धर्मावलम्बियों में मांसाहार का प्रचलन है।) भगवान महावीर ने अहिंसा का संदेश दिया और साथ-साथ उसे अपने जीवन को भी ओत प्रोत कर दिया व अहिंसा का पूर्णरूपेण पालन किया। इस कारण आज भी जैन धर्म में मांसाहार पूर्ण रूप से त्याज्य है। केवल यही नहीं, अहिंसा शब्द मात्र का सामान्य वार्ता में प्रयोग होना ही जैन धर्म की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिये पर्याप्त है। यह तथ्य भगवान महावीर के अहिंसामय जीवन का ज्वलंत प्रमाण है।

भगवान महावीर की वाणी में माँसाहार का सर्वथा निषेध है, जिसके कई पाठ निम्न हैं :–

१. से भिक्खु वा० जाव समाणें से जं पुण जाणेज्जा मंसाइयं वा मच्छाइंय वा मंसखलं वा मच्छखलं वा नो अभिसंधारिज्ज गमणाए।

(आचारांग सूत्र, निशिथ सूत्र)

जैन भिक्षुक को यदि कहीं मांस, मछली अथवा उसके छिलके-कांटे आदि होने का पता लग जाय तो वह वहाँ न जाये।

२. असज्जमंसासिणे।। **(सूत्र, कृतांग सूत्र अ० २)**

जैन साधु मांस-मदिरा का त्याग करें।

३. ये यावी भूजन्ति तहप्पगारं, सेवन्ति ते पावमजाणमाणा, मणं न एयं कुसलं करन्ती वायावि एसा बुईयाउ मिच्छा।

(सूत्र कृतांग सूत्र श्रुत०—२ अ० ६ गा० ३८)

जो मांस - मदिरा का सेवन करते हैं, अज्ञानता से पाप करते हैं, उनका मन अपवित्र है और वचन भी झूठा है।

४. महारंभयाए महापरिग्गहियाए, कुणिमाहारेंण पंचेन्द्रिय वहेणं नेरइयाउय कम्मासरीराप्पयोग नामाए कम्मस्म उदएणं नेरइयाउय कम्मा सरीरे जाव प्रयोग बन्धे। **(श्री भगवती सूत्र श० ८ उ० ९ सू०)**

जीव चार प्रकार के कामों से नरक में जाने के लिये कर्म बांधते हैं। वह हैं– (१) महापाप का आरम्भ ; (२) महा परिग्रह (धनादि संग्रह) ; (३) पंचेन्द्रिय जीव का वध; तथा (४) मुरदे का भक्षण (मांसाहार)

५-६. चउहिं ठाणेहिं जीवा णेरइयत्ताए कम्मं पकरेंति, णेरइत्ताए कम्म पकरेत्ता, णेरइएसु उववज्जंति तंजहा—महारंभ याए महापरिग्गह याए, पचंदियवहेणं कुणिमा हारेणं।

(श्री उववाई सूत्र) **(श्री स्थानागं सूत्र स्थान ४)**

महारम्भ, महापरिग्रह, माँसाहार व पंचेन्द्रिय वध से बांधे हुए कर्म के उदय से नारकी की आयु व नारकी के शरीर बनते हैं।

७. भुजंमाणे सुरं मंसं परिवुडे परंदमे
अय कक्कर भोई य, तुंदिल्ले चियलोहिए।
आउयं नरए कंखे, जहाँ एसं व एलए ।।७।।

(उत्तराध्ययन सू० अ० ७ गा० ७)

मदिरा पान, माँस भक्षण, गुंडापन आदि से नारकी की आयु का बंध होता हैं।

८. हिंसे वाले मुसावाई, माईल्ले पिसुणे सढे
भुंजमाणे सुरं मंसं, सेय मेयंति मन्नई।।९।।
तुहं पियाइंमसांइं, खंडाइं सोलग्गाणिये।
खाइओ विस मंसाइ, अग्नि वण्णइऽणेग सो ।।६७।।

(उत्तराध्ययन सू० अ० ५ गा० ९ अ० १९ गा० ६७)

हिंसक अज्ञ, झूठा, मायावी, चुगलखोर, शठ तथा मांस मदिरा भक्षी होता है और समझता है कि यही जीवन का आनन्द है।

तुझे यदि मांस, मांस की पकाई हुई फांक प्रिय है तो तू भी उसी प्रकार खाया व पकाया जायेगा।

९. अमज्जमंसांसी, अमच्छरीआ, अभिक्खणं निव्विगइं गया अ। अभिक्खणं काउसग्गकारी, सज्झाय जोगे पय ओ हविज्जा।।

(श्री दशवैकालिक सूत्र चु० २ गा० ७)

शराब छोड़ दे, माँस छोड़ दे, विकृत (रस-पुष्ट) भोजन को कम कर, बार बार कायोत्सर्ग, स्वध्याय योग में लीन हो जा।

१०. भेसज्जं पियमंसं देई, अणुमन्नई जो जस्स।
सो तस्स मल्ललग्गो, वच्चइ नरयं ण संदेहो।।

जो औषधि में मांस खिलावे या सम्मति दे वह उसका पिछलग्गू होकर नरक में जाता है।

११. दुग्गधं वीभत्थं इन्दियमलसम्भवं असुइयं च।
खइएण नरयमडणं विवज्जणिज्जं अ ओ मंसं ।।१।।

मांस दुर्गंध वाला है, वीभत्स है, शरीर के मलों से बना हुआ है, अपवित्र है और नरक में ले जाने वाला है। अतः त्याज्य है। १

सद्यः समूर्च्छितानन्त—जन्तु संतान दूषितम्।
नरकाध्वनि पाथेयं, कोऽश्नीयात् पिशितं सुधी?।।२।।

मांस में क्षण भर में ही अनन्त सूक्ष्म कीटाणुओं का जन्म और विनाश होता है। वह नरक के मार्ग में ले जाने वाला भोजन है। कौन बुद्धिमान ऐसे मांस को खाय ? २

आमासु अ पक्कासु अ विपिच्चामाणासु मंस पेसीसु।
सययं चिय उववाओ भणिओउ निगोयजीवाणं ।।३।।

(योग शास्त्र प्रकाश ३ श्लोक मूल व टीका)

मांस कच्चा हो या पकाया हुआ, उसकी हर एक फाँक में निर्वाध रूप से निगोद के जीव उत्पन्न होते हैं। ३

इन पाठों से भगवान् महावीर के आदर्श अहिंसामय जीवन का और उनके द्वारा प्रदत्त अहिंसा के उपदेश का पूरा-पूरा परिचय मिल जाता है। ऐसी स्थिति में उनको माँसाहारी मानना, कहना व लिखना मन का, वाणी का तथा लेखनी का दुरुपयोग करना है।

५. औषध प्रदान करने वाली स्त्री का व्यवहारिक जीवन

सिंह मुनि उस औषध को किसी कसाई के यहां से अथवा यज्ञ-स्थल से नहीं लाये थे। वह उसे एक जैन श्राविका के घर से लाये थे जिसका नाम था रेवती।

जैनागम में उस समय रेवती नाम की दो स्त्रियों का उल्लेख हुआ है।

(१) एक रेवती थी राजगृही के महाशतक की स्त्री जिसके बारें में कहा गया।

तएणं सा रेवइ गाहावइणी अंतोसत्तरस्स अलसएणं वाहिणा अभिभुआ अट्ट दुहट्ट वसट्टा काल मासे कालं किच्चा इमी से रयणप्पभाए पुढवीए लोलु एच्चुए नरए चउरासीई वासहठिइएसु नेरइएसु नेनइएत्ताए उववण्णा।

— (श्रीउपासक दशाँग सूत्र)

(२) दूसरी रेवती थी मेंढिक ग्राम निवासिनी जैन श्राविका जिसके सम्बन्ध में इस प्रकार का वर्णन है।

समणस्य भगवओ महावीरस्स सुलसा रेवइ पामुक्खाणं समणोवासियाणं तिन्नी सय साहस्सीओ अट्ठारस सहस्सा उक्कोसिया समणोवासियाणं संपया हुत्था ।

—(श्री कल्प सूत्र वीर चरित्र)

तएणं तीए रेवतीए गाहावइणीए तेणं दव्व सुद्धेणं जाव दाणेणं सीहे अणगारे पडिलाभिए समाणे देवाउए णिबद्धे, जहा विजयस्स, जाव जम्म जीविय फले रेवती गाहावइणीए

— (श्री भगवती सूत्र श० १५)

सिंह मुनि मृत्योपरांत नरक में जाने वाली राजगृही ग्राम की रेवती के घर से औषध नहीं लाये थे। वह तो मेढ़िक ग्राम वाली रेवती से उक्त औषध लाये थे।

दिगम्बर सम्प्रदाय के विद्वान भी रेवती (मेढ़िक ग्राम वाली) के इस औषधदान की प्रशंसा करते हैं और तीर्थंकर नाम कर्म उपार्जन करने का कारण यही था, इसको स्पष्ट स्वीकार करते हैं।

यथा—रेवती श्राविकया श्री वीरस्य औंषधदानं दत्तम्। ते नौंषधिदानफलेन तीर्थंकर नाम कर्मोपार्जितमत एवं औषधि दानमपि दातव्यम्।

(हिन्दी जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई की जैन चरित माला नं० ६ (सम्यकत्व कौमुदी पृ० ५६)

जो श्रेष्ठ श्राविका है, द्वादश व्रत धारिणी है, मृत्यु उपरान्त देव लोक को जाती है तथा दान से तीर्थंकर नाम कर्म का उपार्जन करती है, वह रेवती माँसाहार करे या उस तीर्थंकर नाम कर्म के कारण स्वरूप मांस का दान करे, ऐसी कल्पना करना निपट मूर्खता है।

६. रोग, औषध और नियमा नियम का विज्ञान

जिस रोग के लिये उक्त औषध लाया गया था, उस रोग का नाम था पित्तज्वर। परिगये शरीरे दाह वक्कं तिए का आशय है पित्तज्वर और दाह, जिस में अरुचि, जलन तथा रक्तातिसर मुख्य लक्षण होते हैं। इस रोग को शांत करने के लिये कोला, बिजौरा आदि तरी देने वाले फल, उनका मुरब्बा, पेठा, कवेला, पारावत फल, चतुष्पत्री भाजी, खटाई वाली भाजी इत्यादि प्रशस्त माने जाते हैं। इस रोग में मांस का सख्त निषेध (परहेज) होता है। वैद्यक ग्रन्थों में साफ साफ कहा गया है– स्निग्धं उष्णं गुरु रक्त पित्त जनकं वातहंरच मांस ऊष्ण है, भारी है, रक्तपित्त को बढ़ाने वाला है। अतः इस रोग में मांस सर्वथा निषिद्ध है। इस रोग में कोला और बिजौरा लाभकारी हैं।

(कयदेव निघण्टु, सुश्रुत सहिंता)

उपरोक्त कथन से यह निश्चित हो जाता है कि वह औषध माँस नहीं था वरन् तरी देने वाला कोई फल या फल का मुरब्बा था।

क्रमशः

कर्म की कहानी

पन्यासप्रवर श्री सुयश मुनि जी

होनेवाला कुछ और ही था। पीछे सैनिक पड़े थे। पैर में कांटा लग गया आगे भागने में असमर्थ हो गया और इसी बीच में कुछ ऐसी घटना घट गई कि रोहणीय का सम्पूर्ण जीवन ही बदल गया। काँटा निकालते-निकालते सैनिको ने आकर उसे पकड़ लिया । इसी समय परमात्मा महावीर के चार वाक्य उसको अनायास सुनने को मिल गये जो इस प्रकार थे :–

(१) देव जमीन से कुछ ऊपर चलते है।

(२) देव की आँख की पलके नहीं झपकती।

(३) देव की गले की माला मुरझाती नहीं।

(४) देव कुमार अवस्था में ही रहते है।

चोर पकड़े जाने के बाद उससे चोरी स्वीकार करवाने के लिये अनेक प्रयत्न किये गये। पर रोहिणेय ने स्वीकार नहीं किया कि मैं चोर हूँ। बात नहीं बन रही थी, राजा का नियम था दोषी स्वयं स्वीकार नहीं करने पर दोष सिद्ध नहीं होता है, जब तक दोष सिद्ध न हो उसे दंड नहीं दिया जा सकता है। एक योजना के आधार पर एक कृत्रिम देव भवन में खूब दारू पिलाकर रखा गया एक स्त्री को देवी बनाकर सेवा में रखा गया। चोर के कुछ होश में आने पर कृत्रिम देवी–बोली– हो नाथ! आप हमारे स्वर्ग में आये है, हम आपका स्वागत करते है। हमारे यहाँ के नियमानुसार आप अपना पूर्व जीवन विवरण बताये फिर यहाँ के दैविक सुख का आनन्द ले। चोर विचार में पड़ गया। सोचने लगा, क्या वास्तविक में मैं स्वर्ग में आ गया हूँ। जो बात बारंबार भूलने का प्रयास कर रहा था वह महावीर के शब्द उसे एकाएक याद आ गये। महावीर ने देवलोक की चार विशेषताएँ बताये थे। इसमें से एक भी बात यहाँ देखने को नहीं मिलती है। तो क्या महावीर झूठ बोल रहे थे? नहीं...नहीं... महावीर स्वामी कभी झूठ नहीं बोलते है। क्योंकि उनको झूठ बोलने का कोई

कारण नहीं है। अवश्य यह कोई इन्द्रजाल है, जो मुझे फंसाने के लिये रचा गया है। अन्त तक चोर मात्र प्रभु महावीर को याद करता रहा, उस कृत्रिम देवी को कोई उत्तर नहीं दिया। गुप्तचर महामंत्री अभय कुमार को खबर दिया कि उक्त चोर ने मौन साध रखा है, और बारंबार प्रभु महावीर को याद कर रहा है। अभय कुमार स्वयं वहां पहुँचे। महामंत्री को देखते ही रोहिणेय खड़े हो गये, दोनों गले लगे। रोहिणेय के आँखों में आँसू की धारा थी। उसने स्वीकार किया महामंत्री जी! मैं ही वही चोर हूँ, पर परम तारक प्रभु महावीर के चार शब्दों ने मुझे आपके इन्द्रजाल से बचाया है। मैं वास्तविक मृत्यु दंड का भागीदारी हूँ। मुझे एकबार प्रभु के दर्शनकरा दे क्यों कि उनकी वाणी ने मेरे जीवन को ही बदल दिया है। उनको अगर मैं नहीं सुनता तो आज मैं आपके जाल में फँस जाता। मुझे इस बात का संतोष है कि मैं स्वेच्छा अपना दोष समझकर स्वीकार कर रहा हूँ। आज दंड के लिए मुझे अफसोस नहीं आनन्द है। आज मैं सत्य को पूर्णरूप से समझ चुका हूँ। चोर का जीवन बदल गया। उन्हें निर्दोष छोड़ दिया गया। चोर सन्यासी बन गया। इसी प्रकार धर्म श्रवण से जीवन में परिवर्तन आता है।

(३) कदाग्रह त्याग– कदाग्रह जीवन को उन्मार्ग में ले जाने का एक दिशामार्ग (one way) है। कदाग्रही समझने के बाद भी सत्य को स्वीकार नहीं कर सकते है। कदाग्रही के जीवन में ऐसी ग्रन्थी बन्ध जाती है कि वे अपनी धारणा से बाहर जाना कतई पसन्द नहीं करते हैं। अपनी नजर के सामने कई दुष्परिणाम को देखकर भी कदाग्रही अपनी मान्यता से दूर हटने के इच्छुक नहीं होते हैं। कद-खराब। आग्रह–जिद–पकड़। कभी-कभी ऐसे लोग अपनी मान्यता के कारण स्वयं तो सत्य स्वीकार नहीं करते है, परन्तु अन्य को भी युक्ति, प्रयुक्ति से पथ भ्रष्ट कर देते है। अपनी मान्यता में सत्य को दर्शाने के लिए कुतर्क से दुष्प्रचार करते है। वे दुराग्रही व्यक्ति अपने दूराग्रह के कारण शास्त्र के वास्तविक अर्थ को भी तर्क से बदलकर अपनी धारणा के अनुरूप अर्थ करते है। अनुभवी पूवाचार्य ने तो ऐसे व्यक्ति से धर्म चर्चा करने के लिये भी निषेध किया है। क्योंकि वे लोग अपनी इच्छा के विरुद्ध मान्यता आने पर हिंसा में उतर जाते हैं।

कदाग्रह सम्यग् दर्शन (सत्यज्ञान) का शत्रु है, कदाग्रही कभी-कभी अच्छे त्यागी, संयमी, ज्ञानी, उपकारी होते है, पर उनकी ये सभी प्रवृत्ति मात्र स्वयं की मान्यता सिद्ध करने के लिये ही होती है।

अज्ञानी को समझाना सरल है। शायद अज्ञानी को समझाने पर उसकी अज्ञानता को दूर किया जा सकता है, परन्तु कदाग्रही का समझना कठिन है।

महाभारत का मुख्य कारण दूराग्रह ही है। महाभारत के युद्ध को रोकने के लिये बुद्धिजीवियों ने अनेक प्रयत्न किये थे। श्रीकृष्ण ने समझौता कराने का बहुत प्रयास किया। समझौते के माध्यम पर दुर्योधन से पांडवो के लिय मात्र पाँच गाँव मांगे गये थे। पर दूराग्रही दुर्योधन ने स्वीकार नहीं किया तो नहीं किया। वे अपने दुराग्रही पर डटे रहे। परिणाम स्वरूप महाभारत का युद्ध हुआ।

कदाग्रह के मूल में अहंकार है। अहंकार के कारण ही व्यक्ति कदाग्रही बनता है। प्रभु महावीर के ११ गणधर महान पंडित थे। प्रत्येक पंडित के पास ५००/५०० शिष्य परिवार था। समाज में अपार मान सम्मान था। परन्तु प्रत्येक के मन में एक संदेह था। किसी अन्य के पास इस संदेह का समाधान नहीं कर पा रहे थे। इनके बीच अहंकार बाधक बन रहा था। अहंकार उन्हें कदाग्रह के दीवार के बीच खड़ाकर दिया था। इस कदाग्रह के कारण स्वयं दुःखी भी थे पर कोई उपाय नहीं था। कुछ करने में या कहने में स्वयं की प्रतिष्ठा, उनका अपना सामाजिक स्तर बाधा खड़ा कर रहा था।

जिस दिन उन्हें महावीर स्वामी मिले। संदेह का समाधान हुआ। अहंकार गलकर नष्ट हो गया, उसदिन कदाग्रह भी स्वयंमेव नष्ट हो गया। स्वयं को वे सभी वीतराग बना दिये।

अज्ञानता से जीवन में अंधकार फैलता है,

दुराग्रह की कुछ पौराणिक घटनाएँ

अज्जा साध्वी— अज्जा नाम की एक परम विदुषी साध्वी थी। विशाल शिष्य परिवार था। समाज में मान-सम्मान भी था। कर्म संयोग से

कुष्ट रोग हो गया। पूर्व जीवन के कोई अशुभ कर्म के उदय से ही होता है। साध्वी इस रोग का कारण पूर्व कर्म स्वीकार नहीं कर रही थी कारण कि अगर इस प्रकार स्वीकार करती है तो लोक हीनता भाव से देखेंगे। समाज में हानि होगी। यह समझकर अहंकार वश असत्य का प्रचार करना प्रारंभ किया। अपने शिष्य परिवार को कहा कि.....गर्म पानी पीने के कारण मुझे यह रोग हो गया है अतः अब तुम लोग भी गर्म पानी पीना छोड़ दो। गुरुणी जी की आज्ञानुसार सभी साध्वीजी ने गर्म पानी पीना बन्द कर दिया। उनमें से एक शिष्या थी, जिसने इस बात को स्वीकार नहीं किया । मन में सोचने लगी—परम तारक परमात्मा वीतराग देव कभी भी दुष्ट मार्ग का उपदेश नहीं देते है। वे तो हमेशा सद्धर्म का ही उपदेश देते है। उनके मार्ग में चलने वाला पथिक कभी भी किसी रूप में मन या शरीर से दुःखी नहीं हो सकता है। इस प्रकार मन में निश्चित करके सभी साध्वियों को छोड़ उत्कृष्ट आराधना साधना करने लगी। उच्च परिणाम के कारण कर्मक्षय करते गये और बहुत ही जल्दी आत्मा की उत्कृष्ट परिणति से केवलज्ञान को उपलब्ध कर लिया। उनके ज्ञान का लाभ साधारण जनता लेने लगी। अज्जा साध्वी भी अपने परिवार के साथ धर्म सभा में पहुँचकर अपनी शंका का समाधान करने लगी। एक दिन एक शिष्या ने गुरणीजी के रोग का कारण पूछा। उत्तर मिला की पूर्वजन्म में अशुभ कर्म करने के कारण ऐसी स्थिति हुई है। इस रोग का कारण गर्म पानी पीना नहीं है। अन्य सभी साध्वियों ने इस बात को स्वीकार करके अपनी गलती का प्रायश्चित किया, पर अजा साध्वी कदाग्रह के कारण सत्य को स्वीकार नहीं कर सकी और दुष्परिणाम के कारण संसार की अनन्त यात्री बन गई।

जमाली मुनि— परमात्मा महावीर स्वामी का जमाई। जो महावीर स्वामी की पुत्री प्रियदर्शना का पति था। परमात्मा की वैराग्यमय वाणी से प्रभावित होकर अपनी पत्नी के साथ दीक्षा लेकर महावीर के शिष्यत्व ग्रहण कर लिये थे। उत्कृष्टज्ञानी बनकर ५०० मुनि के प्रधान बन गये थे।

एक बार बीमार हो गये। शिष्य को संथारा (बिस्तर) करने का आदेश दिये। आदेशानुसार शिष्य संथारा करने के कार्य में लग गये। शरीर में व्याधि के कारण व्याकुलता बढ़ गई। शिष्य से पूछा—क्या संथारा तैयार

हो गया? शिष्य उत्तर दिया—हाँ। पर कार्य प्रारम्भ था पूर्ण नहीं हुआ था। रोग की तीव्रता और व्याकुलता के कारण संथारा के पास आकर क्रोधित हो गये। स्वाभाविक है बीमार व्यक्ति कुछ जल्दी ही उत्तेजित हो जाते है।

जमालि मुनि क्रोधित होकर बोले तुम झूठ बोल रहे हो, महावीर भी झूठ बोलते है, उनका सूत्र क्रियमाणं कृतं (चालुकार्य की सम्पन्नता अवस्था में सम्पन्न ही समझे) ही गलत है। उसी दिन से वे दुराग्रही बन गये। भगवान महावीर से अलग मत चलाये। बहुत समझाने पर भी नहीं समझे। परमात्मा महावीर की पुत्री प्रियदर्शना भी पति का अनुसरण किया। जमाली आगे चलकर स्वयं को वीतराग कहलाने लगे। कदाग्रह के कारण ही इतना अनर्थ हुआ।

रोहगुप्त— रोहगुप्त मुनि एक महान विद्वान साधु थे। पोहशाल परिव्राजक के साथ वाद-विवाद हुआ। हारने की स्थिति में गुरुदेव के आशीर्वाद से जीत गये, पर रोहगुप्त मुनि ने वहाँ एक नया तत्व का स्थापन किया। जीव, अजीव और नोजीव। गुरुदेव बताये कि जैन दर्शन में इसके दो ही भेद है, तीन नहीं। अतः राजसभा में जाकर अपनी भूल स्वीकार कर लो। कदाग्रह के कारण ऐसा करने के लिये अस्वीकार कर दिया। संघ से अलग होकर अलग विचरण करते रहे। कदाग्रह के कारण अनन्त संसार में दुःखी हुए।

इस प्रकार कदाग्रह-हठाग्रह के कारण अनेक व्यक्ति संसार में दुःखी हुए है। जीवन को आनन्दमय बनाने के लिये कदाग्रह को त्याग करना चाहिये।

त्रिवर्ग अबाधा— जब से जीवन मिला है। साथ-साथ जीवन में अनेक आवश्यकताएँ भी आई है। जब तक जीवन है, आवश्यकता भी रहेगी। क्योंकि भौतिकता के मूल्य पर ही जीवन स्थिर है। जिस दिन इस भौतिकता की आवश्यकता पूर्ण हो जायेगी उस दिन हम मुक्त कहलायेगें। संसार में रहने वाले सभी जीव को अपनी-अपनी योग्यतानुसार आवश्यकताएं होती है। इस सभी आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए जो प्रयत्न किये जाते है उसे पुरुषार्थ कहा जाता है। पुरुषार्थ चार प्रकार का है।

(१) अर्थ (ख) काम (ग) धर्म (घ) मोक्ष।

यहाँ मोक्ष की बात बाद में करेगें। इससे पहले पूर्व तीन की चर्चा करते है। मोक्ष संसार पार की स्थिति है। मोक्ष लायक बनने के लिये पूर्वोक्त तीन को व्यवस्थित स्वीकार करना होगा।

अर्थ धन संसार जीवन का एक अत्यावश्यक पदार्थ है। अर्थ के बिना जीवन निर्वाह करना संभव नहीं है। अनुभवी मनीषी कहते है कि अर्थ (धन) जीवन में आनन्द लाने के लिये है। धन से अगर जीवन में दुःख बन्धन, शत्रुता बढ़ती हो तो वह धन-लक्ष्मी नहीं यमराज है । धन हम इस प्रकार से कमाये कि यह धन हमारे पास आने के बाद हमें कठोर अधर्मी और पंगू न बना दे। अर्थ और काम धर्म में बाधक न बने इस बात का पूरा पूरा ध्यान रखना हम सभी का प्रथम कर्तव्य है।

सद्गृहस्थ को धर्म तत्व को केन्द्र बिन्दु में रखकर ही सभी सांसारिक क्रिया करनी चाहिए। सद्गृहस्थ की प्रत्येक क्रिया धर्मतत्व को पुष्ट करने के लिये ही होती है। धर्म को भूलकर सांसारिक प्रवृत्ति करने वाले असद्गृहस्थ है। ऐसे लोग अर्थ और काम को पाकर अपने जीवन को ही नष्ट कर देते है। सद्गृहस्थ बनने के बाद ही जैन बना जा सकता है।

धर्म मूल है, अर्थ और काम शाखा-प्रशाखा पत्ती है, मोक्ष फल है। अर्थ और काम के सेवन में धर्म और मोक्ष का ध्यान अगर नहीं रखा जाय तो अर्थ और काम स्वतः ही नष्ट हो जाएगा। क्योंकि मूल और फल के बिना शाखा-प्रशाखा-पत्ती की कल्पना ही व्यर्थ है।

अर्थ और काम सेवन धर्म और मोक्ष का बाधक न हो इस बात का ध्यान रखना चाहिए।

कामज्वर से पीड़ित लंकाधिपति रावण सम्पूर्ण लंका को ही नष्ट कर दिया। सती सीता के कारण अपनी सभी मर्यादायें भूल गया। धर्म तो गया ही अपनी वंश परम्परा भी समाप्त हो गई। स्वयं महान प्रभु भक्त और ज्ञानी पंडित होते हुए भी कामज्वर में अन्धे हो गये।

दूसरा मम्मन सेठ, धन के कारण धर्म को भूल गये। जिस धर्म के बल पर उन्हें धन मिला था, उस धर्म को ही भूल गये। परिणाम यह आया कि धन के कारण ही मरकर सातवें महानरक में दुःख भोगने पड़े ।

मम्मन सेठ— एक बार किसी धर्म सभा से प्रभावन (प्रसाद) लेकर एक गृहस्थ अपने घर आये। घर पहुँचते ही एक जैन मुनि आहार के लिए उनके घर पर पधार गये। दरवाजा खुला देखकर मुनि अपने नियमानुसार धर्मलाभ से सम्बोधित करते हुए घर के अन्दर आ गये। सेठजी अभी अभी

धर्म सभा से प्रवचन सुनकर आये थे घर में भोजन तो तैयार नहीं हुआ था। जल्दी में कुछ मुनि को देने लायक तैयार वस्तु न पाकर कर्तव्य भाव में खड़े हो गये। मुनि स्थिति समझकर वापस जाने की तैयारी में थे। उसी समय श्रावक को अभी-अभी प्रभावना में लाया लड्डू याद आ गया। भावपूर्वक मुनि को लड्डू वोहरा (दे) दिये। मुनि धर्मलाभ देकर आगे चल दिये। कुछ देर बाद पड़ोसी मित्र जो साथ में प्रवचन सुनने गया था। उसके पास आया और बोला— भाई! तुम अभी जो लड्डू लाये वह खाया या नहीं, वे लड्डू बड़े ही स्वादिष्ट है। सेठ ने आगन्तुक मित्र को बोला— भाई! मैं तो लड्डू खाया ही नहीं एक मुनि अभी-अभी हमारे घर आया था उनको दान में दे दिया। पास में ही एक थाली में लड्डू का दो / चार दाना पड़ा था। उठाकर मित्र को दिया। खाया तो बड़ा ही स्वादिष्ट लगा। अपने लाभ को रोक नहीं पाये। अब उनकी लड्डू खाने की लालसा जग गई। पर कोई उपाय नहीं था। मुनि को दान दे दिया गया था। पर विवेकहीन व्यक्ति क्या नहीं करता है। मन ही मन निश्चय किया मुनि के पास से लड्डू वापस लिया जाय। लड्डू वापस लेने के लिये मुनि के पीछे चल दिये। गांव के बाहर जाते जाते मुनि मिल गये। विनम्र पूर्वक हाथ जोड़कर मुनि से प्रार्थना किया—महाराज! मैं भूल से आपको लड्डू दे दिया है। वह मुझे वापस कर दे। उसके बदले में आप जो भी चाहेंगे दूंगा। पर आज तो वह लड्डू मुझे आप अवश्य ही लौटा दे। लड्डु वापस लेने के लिये सेठजी अनुनय-विनय करते हुए बस्ती के बाहर तक पहुँच गये। मुनि समझ गये कि व्यक्ति लाभ पाकर अपने कर्तव्य ज्ञान को भूल जाते है। मुनि कहे— भाई! पात्र में लिया हुआ पदार्थ वापस गृहस्थ को देना हमारा नियम नहीं है। मुनि को धर्मलाभ में दिया हुआ कोई भी वस्तु गृहस्थ को अपने कार्य में नहीं लेना चाहिये। इसीलिये मैं आपको यह लड्डू तो दे नहीं सकता हूँ। पर सेठजी ने हठ पकड़ लिया। किसी भी रूप में बात मानने को तैयार नहीं हो रहे थे। मुनि समझ गये किसी भी रूप में इनको समझाया नहीं जा सकता है। और कोई उपाय न होने पर मुनि ने एक वृक्ष के नीचे बैठकर सेठजी से इधर उधर की बाते करते-करते उनका दिया हुआ लड्डू मिट्टी में मिला दिया। फिर उनको दिखाते हुए बोले–भाई! तुम्हारा लड्डू तो मिट्टी में मिला दिया गया। सेठ निराश होकर अपने घर लौट आये। भाव

पूर्वक मुनि को दान तो दिया था पर पुनः न पाने पर उनको दुःख था। न खाये और न खाने दिये। दान देकर उस समय उत्कृष्ट भाव से पुष्प उपार्जन तो कर लिये। परिणाम स्वरूप अगले भव में पुण्य के बल पर मम्मन शेठ अपार धन कमाये, पर भोगान्तराय कर्म के कारण उस धन को न स्वयं भोग सके न धर्म-परोपकार के कार्य में लगा पाये।

इन सभी प्रसंगो से एक सार मिलता है कि धार्मिक कार्य में किसी स्थिति में बाधा पहुँचाना अनुचित है।

समृद्धि सन्मार्ग का बाधक न हो।

भोजन व्यवस्था के दो प्रकार—

(१) अजीर्ण भोजन त्याग।

(२) काले हितमित भोजन।

पाप या पुण्य कर्म का परोक्ष या प्रत्यक्ष कारण शरीर है। इन्हीं कर्मों के परिणाम स्वरूप यह संसार का प्रवाह चलता है। इन्हीं कर्मों के द्वारा जीवात्मा संसार में सुख या दुःख का अनुभव करता है। फिर इसकी श्रंखला चलती रहती है। यह भी सत्य हकीकत है कि मानव शरीर ही मुक्ति देने में समर्थ है। जैन दर्शन कहता है कि मानव शरीर अमूल्य है । इस शरीर का दुरुपयोग न करें। विविध प्रकार की तपस्या का भी शरीर को नष्ट करने के लिये नहीं वासना को नष्ट करने के लिए आयोजन किया गया है। शरीर को नष्ट करने के लिए तप आचरण स्वयं के ऊपर अत्याचार है। शरीर या इन्द्रियों को नष्ट करने के लिये तप है, ऐसी भूल कभी न समझे।

शरीर को स्वस्थ्य बनाये रखना। इसकी सम्यग् रक्षा करना हमारा प्रथम धर्म है। इसके साथ-साथ इस बात का भी हमें ध्यान रखना है कि शरीर की रक्षा के नाम पर इन्द्रियों का पोषण करने के लिए अखाद्य या कुखाद्य का सहारा न ले बैठे।

संसार में जीने वाले दो प्रकार के लोग होते है- एक खाने के लिये जीते है और दूसरे जीने के लिये खाते है।

जैन दृष्टि से शरीर की रक्षा के लिए यथोचित भोजन का सेवन करना ही उचित है। भोजन शरीर के लिए भजन का कार्य है भंजन का नहीं।

शरीर रक्षण की एक घटना— एक धनी सेठ थे। उनके घर में एकबार डकैतों ने हमला कर दिये। धन लूट ले जाने के साथ-साथ उनके एक लड़के को जान से मार दिया। पुलिस की तलाशी में दोषी पकड़ा गया। खून और चोरी के आरोप सिद्ध होने पर दोषी को आजीवन कारावास का दंड दिया गया। कुछ दिन के बाद किसी भयंकर आरोप में सेठ को भी पुत्र हत्यारे के कमरे में ही स्थान मिला। इतना ही नहीं इन दोनों को एक ही जंजीर में बाँध दिया गया। अब दोनों की शारीरिक क्रिया भी परस्पर सहमति से ही संभव थी। कारागार में भोजन की व्यवस्था अनुकूल न होने से शेठ अपने घर से भोजन मंगवाने की अनुमति लिये। अपने घर से भोजन मंगवाकर सेठ जी खाये और चोर देखता रहा। चोर को बड़ा क्रोध आया। बदला लेने का मन-ही-मन सोच लिया कि सेठ अपने पैसे के बल पर अच्छा-अच्छा भोजन मंगवाकर खायेगा और हम देखते रहेगे। इसका बदला तो लेना ही चाहिए। कुछ समय के बाद सेठजी को पायखाना जाने की इच्छा हुई। पर चोर ने जाने के लिए इन्कार कर दिया। चोर बोला— खाना तो आप अकेले खाये उस समय मैं देखता रहा, और अब जब आपको पायखाना जाने की इच्छा हुई, तब मुझे पूछ रहे हैं तो मैं तो आपके साथ नहीं जाऊंगा, मेरी इच्छा होगी तभी जाऊंगा। सेठजी असहाय थे। सब कुछ समझ गये। चोर से उन्होंने समझौता किया, वचन दिया कि अब कल से हम एक साथ भोजन करेंगे। समझौता होने के बाद ही चोर सेठजी के साथ पायखाना गया।

दूसरे दिन भोजन लेकर सेठानीजी स्वयं आयी। पहले दिन समझौता के अनुसार दोनों एक साथ भोजन करने बैठ गये। अपने पुत्र के हत्यारे को अपने पति के साथ बैठकर भोजन करते देखकर सेठानी आग बबूला हो गई। परिस्थिति को देखकर कुछ कह न पायी। सेठजी इशारे में समझा दिया इसके बिना और कोई उपाय नहीं है।

इस दृष्टान्त से एक बात स्पष्ट हो रही है कि परिस्थिति वश मजबूरी में आकर ही मात्र रक्षक की भावना से भोजन करें। इस रूपक में—सेठ को आत्मा। शरीर को चोर समझे। शरीर का रक्षण करना है, पोषण नहीं।

आसक्ति के कारण नहीं पर आसक्ति के कारण भोज करे।

शरीर को स्वस्थ रखना अनिवार्य है। स्वस्थ शरीर ही धर्म आराधना, तप, ध्यान करने में योग्य है। अस्वस्थ या दुर्बल शरीर वाला साधना करने में असमर्थ है।

हमारे भारतीय संस्कृति में गुरुदेव शिष्य को सम्बोधन मे कहते है हे आयुष्मान्! आयुष्यमान का अर्थ है अपने जीवन को पूर्णरूप से जानने वाला।

शरीर आरोग्य विज्ञान को आयुर्वेद कहते है, जिसका अर्थ होता है।

आयुर् – आयुष्य। वेद – जानना । अर्थात अपने जीवन को अच्छी तरह जानना। मनुष्य जीवन में (आयुष्य) आत्मा का वास्तविक परिचय करना मुख्य उद्देश्य है। न कि भौतिक सुख भोगने के लिये। पूर्वकाल में खान-पान सात्विक होने से शरीर निरोगी रहता था। दवा की आवश्यकता ही नहीं रहती थी। वे लोग खान-पान के आधार पर ही अपने जीवन को स्वस्थ रखते थे। सभी प्रकार की भोजन सामग्री एक-एक औषधी है। इन भोजन सामग्री को अगर ठीकरूप से सेवन किया जाय तो वही दवा का कार्य करेगा।

प्रत्येक वनस्पति में औषधि का एक अंश होता है।

लुकमान नामक एक विदेशी वैद्य थे। भारतीय वैद्य की चिकित्सा प्रक्रिया जानकर उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ कि भारतीय वैद्य किसी बीमारी पर तुरन्त दवा नहीं देते है, परन्तु रोगी के, दिनचर्या खान-पान रहन-सहन पर ध्यान देते है।

लुकमान ने अपने एक विश्वस्त शिष्य को भारतीय वैद्यक प्रक्रिया की परीक्षा के लिए भारत भेजे। शिष्य को यह भी सूचना दी कि रास्ते में इमली के वृक्ष के नीचे ही रात्रि विश्राम करे। शिष्य गुरु के आदेशानुसार वैसा ही किया। परन्तु परिणाम यह आया कि भारत पहुँचते -पहुँचते उसका शरीर व्याधि से फूल गया। भारत पहुँचकर एक अनुभवी वैद्यराज से मिला। वैद्यराज सभी बाते जानने के बाद आगन्तुक को बताया कि व्याधि का कारण इमली है अतः आप कुछ दिन नीम वृक्ष के नीचे रात्रि विश्राम करे, दवा की कोई आवश्यकता नहीं होगी। इसी सें आपका सबकुछ ठीक हो जायेगा और वास्तविकता वैसाही हुआ। लुकमान ने भारतीय वैद्य की मुक्त कंठ से प्रशंसा किया।

असात्विक भोजन से तन, मन और धन तीनों की बर्बादी होती है।

(१) अजीर्ण भोजन त्याग— पहली बार किया हुआ भोजन जब तक सम्पूर्ण परिपक्व न हो जाय तब तक दूसरी बार भोजन की इच्छा नहीं करनी चाहिए। इस लोलुपता के लिए कुछ भी और कभी भी खाना शरीर के ऊपर अन्याय अत्याचार हैं। बारम्बार भोजन करने से पाचन शक्ति कम हो जाती है। परिणाम स्वरूप आगे चलकर वायु, अल्सर, एस. डी. टी. की संभावना अधिक बढ़ जाती है। अजीर्ण अवस्था में मात्र पानी में नीबू डालकर पानी पीने में ही हित है।

अजीर्ण के कुछ लक्षण— (१) खट्टा डकार आना। (२) दुर्गन्ध युक्त वायु निष्षरण होना। (३) पतला पायखाना होना (४) पायखाना निर्वृत्त होने में बहुत समय लगना (५) बारंबार प्यास लगना। (६) कमर में दर्द होना। (७) शरीर में खुजली आना। (८) सिर में दर्द होना।

वर्तमान समय में अधिकांश रोगों का कारण मुख्यतया भोजन की अनियमितता हैं। आज के डाक्टर स्पष्ट रूप से यह स्वीकार भी कर रहे है कि हमारे दवाखाना में आने वाले रोगी में ९० प्रतिशत पेट से सम्बन्धित होते है।

काले हित-मित भोजन— भूख लगने पर उचित सन्तुलित भोजना करना चाहिए। भूख न लगने पर भी मात्र उपचार के लिए भोजन करना अनुचित है।

प्रश्न- भूख लगने पर रात्रि को भोजन करना उचित है?

उत्तर- नहीं। यहाँ तो रात्रि को भोजन करना सर्वथ निषेध है। सूर्यास्त से पूर्व भोजन कर लेना प्राय सभी भारतीय धर्म सम्प्रदाय की सामान्य मान्यता है। दूसरी एक मान्यता है कि सोने से ३ घण्टे पूर्व भोजन करना हितावह है। आयुर्वेद शास्त्र की मान्यता है कि सूर्य के मध्याह्न समय में जठराग्नि पूर्ण विकसित होता है।

समय के साथ-साथ अपने शरीर के स्वभाव में जिन पदार्थों का अधिक अनुकूल सम्बन्ध है, वैसे खाद्य पदार्थ ही खाने का आग्रह रखें।

शरीर में मुख्य तीन तत्व होते है।

(१) कफ (२) पित्त (३) वायु।

कफ प्रकृति वाले को नमक या नमकीन पदार्थ का व्यवहार अधिक करना चाहिये।

पित्त प्रकृति वाले को मिष्टान्न भोजन अधिक लेना चाहिये।

वायु प्रकृति वाले को घी का व्यवहार अधिक करना चाहिये।

हर व्यक्ति को सर्वप्रथम अपना शारीरिक स्वभाव समझ लेना चाहिए। फिर अपने स्वभाव के अनुरूप एक प्रमाण में उस वस्तु का व्यवहार करना चाहिए। अच्छा पदार्थ भी प्रकृति के विरुद्ध या अधिक प्रमाण में व्यवहार करने से शरीर को लाभ नहीं बल्कि हानि ही पहुँचाता है।

जो व्यक्ति भूख लगने पर उचित समय पर प्रकृति के अनुरूप मर्यादित भोजन करता है, वह कभी-भी बीमार नहीं पड़ता है। शरीर में आलस्य या अशक्ति का प्रभाव नहीं पड़ता है। मन चंचल या क्रोधित स्वभाव नहीं होता है। मन शांत रहता है कोई भी वस्तु सरलता से समझने की क्षमता होती है।

शरीर विज्ञान का महत्वपूर्ण प्राचीन आयुर्वेद शास्त्र कहता है कि मोक्ष के लिए मन को शांत करना होगा। मन को शांत करने के लिए शरीर के सात धातुओं को सम करना होगा। संतुलित भोजन से ही सातो धातु सम रहता हैं। धातु की विषमता ही आर्न्तध्यान और रौद्र ध्यान का कारण है।

सभी रोगों का मूल कारण अधिक भोजन और रस आसक्ति है। आधिकाधिक व्यक्ति रसना के लिये ही विशेष भोजन करते है। शास्त्र में भोजन विषयक कुछ हिताहित के विषय में उल्लेख।

(१) जितं केन ? रसो हि येन।

जो रस को जीते, वही सब कुछ जीते।

(२) योहि मितं भुङ्क्ते, स बहु भङ्क्ते।

जो थोड़ा खाता है, वह बहुत खाता है।

(३) जे सारक्खाया, ते तयक्खाया।

जे तयक्खाया, ते सारक्खाया।।

जो सार खाया वे छाल खाया और जो छाल खाया वे सार (मिष्ठान्न) खाया।

(४) अक्खाण रसणी –

पाँच इन्द्रियों में सबसे खतरनाक रसेन्द्रिय है।

(५) हित भुक्, मितभुक्, असाक् भुक्।

हितकर खाये, मितकर खाये परिपक्व खाये।

(६) शरीर माद्य खलु धर्मसाधनम्.....

अनेक धर्मसाधन में शरीर प्रथम धर्म साधन है।

(७) रस मूलानि व्यधय— सभी रोगों का मूल कारण जीह्वा रस है।

इस प्रकार भोजन सम्बन्धी अनेक बाते अलग-अलग ग्रन्थ में अलग-अलग संदर्भ में मिलता है।

एलोपैथी औषधि में अनेक विकृतियाँ होने के कारण यथा संभव इससे दूर रहने का प्रयास करना चाहिए। क्योंकि —

१. इसमें अनेक अखाद्य मिला हुआ रहता है।

२. अनेक निर्दोष प्राणी को क्रूर रूप में हिंसाकर के तैयार होती है।

३. शरीर में नया रोग उत्पन्न करती है।

४. शरीर में स्थायी रोग ला देता है।

५. इन्द्रियों को क्षति पहुँचाकर विकलांग बना देती है।

६. एक बार व्यवहार करने के बाद इसे बारंबार व्यवहार करना अनिवार्य हो जाता है।

इसका अर्थ यह नहीं कि सभी एलोपैथिक औषधि हिंसात्मक और अहितकारी है, पर उसकी पूर्ण जानकारी लेकर ही व्यवहार करना चाहिये।

बाजार के खाद्य पदार्थ का सर्वथा त्याग करें। क्योंकि इस सब को अर्थोपार्जन का मुख्य केन्द्र में रखकर तैयार करने के कारण शुद्धता पर ध्यान नहीं दिया जाता है। होटल आदि में अनेक प्रकार के रोगों के जीवाणु की संभावना भी अधिक होती है। दूसरी बात यहाँ अनेक लोगों का समागम होने से परम्परागत वंशगत संक्रामक बीमारी का संक्रमण होने की संभावना अधिक रहती है क्योंकि वर्तन ठीन ढंग से धोया नहीं जाता है।

१५ दिन में एक बार उपवास करना शरीर के लिए हितावह है। अगर उपवास (जैन विधि से उपवास के पूर्व दिन के सूर्यास्त से उपवास के दूसरे दिन के सूर्योद्य के बाद ४८ मिनट तक कुछ भी न खाना) न कर सके तो

एकासना, बेयासना आदि कुछ न कुछ तपस्या अवश्य करने से शरीर को विश्राम मिलता है। पाचन क्रिया प्रदीत्प होती है तथा अपनी आसक्ति पर लगाम लगता है। शरीर और मन दोनों ही पवित्र होते है। प्रत्येक गृहस्थ को कम से कम १ महिना में १५ दिन ब्रह्मचर्य का पालन अवश्य करना चाहिये।

हाथ-पैर धोकर शांत चित्त में भोजन करना चाहिये। कषाय भाव में अर्थात क्रोधित मन में कभी भी भोजन न करें। भोजन से पूर्व तीन या एक नमस्कार का जाप, परमात्मा स्मरण, गुरुदेव को याद करके ही भोजन प्रारंभ करना चाहिये । क्रोधित होकर भोजन करने से भोजन की पाचन क्रिया जल्दी नहीं होती है या कभी-कभी भोजन विषक्त बन जाता है।

मानव देह अमूल्य रत्न है, इसका यत्न करें।

क्रमशः

चन्द्रकला कहती है प्राणधार! आपकी विलक्षण बुद्धि और पुरुषार्थ के सामने मेरा अनुत्तर हो जाना कोई विशेष बात नहीं है लेकिन आप मेरी इस तुच्छ प्रार्थना को भी स्वीकार करें कि यदि आप किसी प्रकार भी नहीं रुक सकते हैं तो इस अभागिन एवं अकिंचन नारी को भी साथ लेते जावें। सुख-दुःख में मैं आपकी सहगामिनी हूँ तथा मेरा स्त्री धर्म भी मुझे बार-बार प्रेरित कर कहता हूँ कि—मैं छाया की तरह सदा आपके साथ-साथ बनी रहूँ। सीता जैसी धीर और महान् नारी भी पतिवियोग के समय क्या कहकर रामको उसे साथ ले जाने के लिए प्रेरित करते हुई कहती हैं कि :—

जब लगि नाथ, नेह अरू नाते,
पिय बिन तिय हिं तरणि ते ताते।
भोग रोग सम, भूषण भारू,
नरक यातना सरिस संसारू।।

हे स्वामिन् ! जब तक आप हैं तबकर कुटुम्बियों से प्रेम और-रिश्ता नाता है। पति के बिना स्त्री को वे सब सूर्य से भी बढ़कर तपाने वाले हो जाते हैं, भोग रोग के समान तथा गहने भारभूत हो जाते हैं, और यह सारा संसार नरक के कष्टों की तरह बड़ा दुखःद बन जाता है। अतः स्त्री संसार में माता पिता आदि के वियोग के दुःख को सहन कर सकती है परन्तु पति के वियोग को क्षणभर भी नहीं सह सकती। नाथ! मैं आपको ही पूछती हूं कि क्या सीता राम के साथ वन में नहीं गई? क्या नल के साथ दमयन्ती वन वन भटकती नहीं फिरी ? क्या द्रौपदी ने पाण्डवों के साथ वन में रहकर असह्य कष्ट न सहे? क्या राजपूत रमणियां पतिवियोग में जिन्दा जलकर नहीं मरी? आप शास्त्रज्ञ होते हुए भी सती माहात्म्य को क्यों भुला रहे हैं? आप महान् हैं, अतः किसी भी समय तथा किसी भी स्थान पर, आपको दुःख बाधित नहीं कर सकते। पर मुझ तुच्छ नारी को आपके बिना स्वर्ग में भी सुख प्राप्त नहीं हो सकता। मैं आपके साथ पथ-बाधा बनकर न रहूँगी तथा आपकी सेवा करती रहूंगी। अतः हे प्राणधार! मुझे साथ चलने की आज्ञा दीजियें।

यह सुन करुणार्द्र हृदय कुमार बोला पद्मिनी तुम्हारा कथन अनुचित नहीं पर मार्ग की कठिनाइयां तुम्हारे कोमल शरीर से कैसे सही जायगी। सूर्य की प्रचण्ड किरणों से संतप्त पृथ्वी पर तुम चलने में कैसे समर्थ हो सकोगी। कहीं मार्ग में बसेरा मिलेगा कहीं नहीं, मार्ग में पद-पद पर तुम्हें दुःख होगा, और तुम्हें दुःखी देखकर मुझे दुःख होना अवश्यम्भावी है अतः जितना उपकार तुम घर पर रह कर मेरा कर सकती हो उतना साथ रहकर नहीं ! तुम्हारे साथ रहते हुए मेरे उद्देश्य की सिद्धि में भी कई बाधाएँ उपस्थित हो सकती है। क्या तुम्हें मालुम नहीं कि राम के साथ वन में लक्ष्मण को जाते देखकर उनकी सती-स्त्री उर्मिला ने भी साथ चलने का मनोभाव प्रकट किया था? तब लक्ष्मण ने कहा था, कि उसके साथ रहने से उनके आराध्य देव राम की उपासना और सेवारूपी उद्देश्य में बाधा पहुँचेगी। अतः उसका साथ चलना ठीक नहीं। उर्मिला ने अपने पति लक्ष्मण की उद्देश्य सिद्धि में विघ्न बनना उचित नहीं समझा और अपना धर्म विचार कर साथ जाने का इरादा छोड़ दिया। अतः तुम भी मेरी आज्ञा को अपना धर्म मानकर साथ चलने का इरादा त्याग दो, और यहीं रहो। यदि तुम्हारा मन यहां न लगे तो अपने मायके अथवा ननिहाल इत्यादि अपने इच्छित स्थानों पर रहती हुई तुम देव पूजादि धार्मिक कृत्यों में रत रहकर मेरे कठिन मार्ग को सुगम बना सकती हो। क्यों कि तुम्हारे धर्म और शील के प्रभाव से मेरे सारे अनिष्ट नाश हो जायेंगे तथा मैं सुख और शान्ति का अनुभव करूंगा।

इतना कहकर कुमार ने उसके आंसू पोछे तथा यथेप्सित वस्तुएं प्रदान कर हित की बातें समझाकर विदेश जाने को तैयार हुआ।

पति को विदेश यात्रा के लिए दृढ़-संकल्प देख पति का हित चाहने वाली पद्मिनी चन्द्रकला ने गद् गद् स्वर में कहा :—

यदि मैं ऐसा कहूँ कि मत जाओ तो यह अमंगल होगा। अगर कहूँ कि जाओ तो मेरा वचन बड़ा ही स्नेह हीन होगा। अगर कहूँ कि ठहरो तो ऐसा कहना अपनी प्रभुता प्रकट करना है। यदि ऐसा कहूं कि आपकी इच्छा के मुताबिक करो तो इसमें उदासीनता मालुम होती है। यदि साथ चलने को कहूं तो यह मेरा कदाग्रह होगा। अगर साथ न चलने को कहूं तो मेरी वाणी की तुच्छता प्रकट होगी। अतः हे स्वामिन् आपके प्रस्थान के समय में मैं कुछ भी नहीं बोल सकती। परन्तु फिर भी मैंने किसी समय अपने गुरू के मुखारविंद

से नवकार मंत्र के बड़े भारी महत्व को सुना है, अतः आप इसे धारण कर लीजिए। यह आपको शिरस्त्राण, मुख पर कवच, आयुध और पदत्राण का काम देगा। सदैव यह आपकी आभ्यन्तर और बाह्य रक्षा करेगा। युद्ध में संकट में और मार्ग में नित्यप्रति स्मरण करने पर यह नवकार मंत्र आपका सच्चा सहायक होगा। चोर, शत्रु, डाकू, सर्प, व्यन्तर और वैताल आदि के भय से आपकी रक्षा करेगा और सब प्रकार की सुख सम्पत्तियां प्रदान करेगा।

प्राथनाथ ! आपका मार्ग कल्याणकारी हो। आपका कल्याण हो पुनरागमन अति शीघ्र हो। मार्ग में आपके अभीष्ट सिद्ध होते रहें। कभी-कभी मुझे भी अपना स्वजन जान याद करते रहें।

इस प्रकार मंगल कामना करती हुई चन्द्रकला के द्वारा बोले गये प्रिय तथा सुमधुर वचनों का कुमार ने स्वागत किया। कुछ समय तक प्रस्थान-काल में किया जाने वाला प्रेमपूर्ण वार्तालाप किया। चन्द्रकला के द्वारा शुभकामना से शकुन के लिए दिया गया फल स्वीकार कर कुमार उठ खड़ा हुआ। नित्यप्रति की ही पोशाक पहने हुए तथा थोड़ा सा पथ-साधन लेकर, सती साध्वी प्रियतमा को आश्वासन देकर और अन्तिम बिदाई लेकर कुमार घर से निकल पड़ा।

रात्रि का द्वितीय प्रहर था। निस्तब्ध निशा के अन्धकार में नगर की बड़ी-बड़ी सड़कें भी जनशून्य हो रही थीं। दिन की सी धूमधाम बाजारों में नहीं थी, और न ही उमड़ता हुआ जनसमूह कहीं दिखाई पड़ रहा था। कहीं कोई इक्का दुक्का माना तेजी से निज गृह की ओर लपकता हुआ दिखाई दे जाता था। बाजारों तथा गलियों का जगमगाता तेज प्रकाश भी मंद हो गया था, केवल चौराहे ही तेज प्रकाश युक्त थे। सब अपने-अपने घरों में आराम कर रहे थे। घर के बाहर की दुनिया का किसे ध्यान था। सब अपने-अपने राग में मस्त थे। ठीक उसी समय हमारा तेजस्वी कुमार श्रीचन्द्र सुगमता पूर्वक चला जा रहा था। मुख पर शान्ति विराज रही थी। किसी प्रकार का खेदजनक चिन्ह दृष्टिगोचर नहीं हो रही थी। अपनी धुन में मस्त कुमार मस्ती से बढ़ा जा रहा था, आसानी से वह थोड़ी ही देर में नगर से बाहर आ पहुँचा।

नगर के बाहर निर्जन में एकाकी कुमार के साथी केवल पूर्वोपार्जित पुण्य-कर्म ही थे। कुमार शकुन शास्त्र का ज्ञाता था तथा, उसमें विश्वास भी

रखता था, अतः कुछ देर ठहर कर अनिश्चित की ओर बढ़ने से पहले उसने ध्यानपूर्वक पक्षियों की बोली सुनना प्रारम्भ किया। जिस तरफ शुभ शकुन युक्त पक्षी बोल रहा था, कुमार ने उसी तरफ प्रयाण किया।

चलते-चलते रात्रि बीत गई आसमान में अरुणोदय की लाली छा गई। चिड़ियाँ सुमधुर स्वर में गा गाकर प्राभातिक स्वागत करने लगीं। सुगन्धि-शीतल-धीर समीर चलने लगा। रात्रि में बन्द हुए कुसुम खिलने लगे, और भ्रमर समूह अपने को मुक्त पाकर गुज्जार करता हुआ उड़ने लगा। मानो बन्धन से मुक्ति पा जाने के कारण हर्षातिरेक से नाचता हुआ अपने मुक्तिदाता सूर्य का यशोगान कर रहा हो। चारों तरफ छिटकी हुई हरियाली आंखों को तृप्त कर रही थी। पक्षियों की सुमधुर बोली कानों की तृप्ति का साधन बन रही थी। सुगन्धित शीतल शरीर तथा नासिका की तृप्ति का कारण समीर चल रहा था। भगवद् भजन से जिह्वा तृप्ति पा रही थी। समस्त इन्द्रियों की लालसाओं की पूर्ति करने वाले इस मनोहर प्रातःकाल की वेला में मन प्रफुल्लित हो उठा। तबियत हरी हो गई। राह के श्रम को दूर करने के लिये कुमार ने भी एक लघुपुष्करिणी के सुहावने तट पर सघन वृक्ष की छाया में अपना आसन जमाया। उसी स्थान पर एक कनफटा योगी पहले से ही विद्यमान था। योगी महाशय से इधर-उधर की बातचीत के बाद कुमार ने कुछ धन देकर उसका साधु-वेश खरीद लिया। अपने कीमती वस्त्राभूषणों को वहीं किसी गुप्त स्थान पर छिपा कर कुमार ने वह साधु-वेश धारण किया और देखते-देखते ही एक राजकुमार से कार्पटिक-बाबाजी के जैसा बन गया। कुछ समय वहीं पर विश्राम कर कुमार ने फिर उत्तर दिशा की तरफ प्रस्थान किया।

विचित्र वस्तुओं से भरे इस संसार क्षेत्र में एकाकी कुमार अपने आप में सन्तोष अनुभव करता हुआ चला जा रहा था। मार्ग में कई नगर, ग्राम, नदी तालाब बाग-बगीचे, पहाड़, गुफायें, मनुष्य, स्त्री, पशु पक्षी, आदि अनेक साधारण, असाधारण, आश्चर्यकारी दृश्य दृष्टिगोचर हुए। जहां इच्छा होती वहीं ठहर जाता था। जब इच्छा होती चल देता था।

मार्ग में जन-जन के मुख से कुमार श्रीचन्द्र को अपने ही चरित्र-गान सुनाई पड़े। कहीं राधावेध के प्रबन्धगीत, तो कहीं नृप नन्दिनी तिलकमञ्जरी

के उलाहने के पद। कहीं सुवेग-रथ और घोड़ों की अद्‌भुत दान लीला, तो कहीं पद्‌मिनी चन्द्रकला के विवाह के वर्णन। इस प्रकार बागों में झूले पर झूलती लीलावती-ललनाओं के कोकिल-कंठों से मीठे-स्वर में गाये जाते यशो-गान और अनुपम जीवन घटनाएं सुनता कुमार आगे बढ़ता जाता था।

इधर प्रातःकाल होते ही धीर-मंत्री राज-सभा में जा पहुँचा। उसने महाराज प्रतापसिंह के सामने बड़े विनीत और राजकीय ढंग से कुमार श्रीचन्द्र के विवाह का प्रस्ताव रखा। ठीक उसी समय राजा दीपचन्द्र देव के सेनापति ने आकर पद्‌मिनी चन्द्रकला के विवाह की सारी बातें महाराजा से निवेदन की। प्रसन्न-मनवाले महाराजा ने महारानी सूर्यवती को इन सुखद-समाचारों से अवगत कराया। महारानी ने इन समाचारों से भारी हर्ष प्रकट किया। अपनी बहन चन्द्रवती की पुत्री चन्द्रकला से मिलने के लिये महाराज से आज्ञा लेकर महारानी बड़ी सज-धज के साथ लक्ष्मीदत्त सेठ के निवास-स्थान पर जा पहुँची।

जब चन्द्रकला ने सुना कि मासीजी मिलने के लिये आ रही हैं, तो बड़ी तेजी से वह भी स्वागत में सामने आई और बड़े प्रेम से महारानी मासी सूर्यवतीजी को प्रणाम किया। महारानी ने भी उसे हृदय से लगा लिया और माथे पर हाथ फेरते हुए आशीर्वाद दिया, कि बेटा! चिरंजीवी रहो। परस्पर कुशल प्रश्न के बाद पद्‌मिनी चन्द्रकला ने महारानी को अपना महल और दहेज की वस्तुओं को दिखाया। कुटुम्ब सम्बन्धी बातें भी खूब हुई। सेठ को पूछवा कर महारानी चन्द्रकला को अपने राजमहल में ले आई।

महाराजा चन्द्रकला के विवाह में घटी घटनाओं को सुनकर अचरज में डूब गये। कुमार को बुलाने के लिये महाराजा ने अपने खास आदमी भेजे। सेठ लक्ष्मीदत्त ने कुमार के निवास-स्थान में पता लगाया पर कहीं भी कुमार की खोज खबर न मिली। सेठ बड़ा चिन्तित हुआ छाती पीट कर बेहोश सा कहने लगा अरे! मेरा लाडला बेटा घर से निकल गया है। कहां गया? उसे ढूंढने के लिये नगर का कोना-कोना छान डाला। कुमार के मित्र, सेवक, एवं सिपाहियों को इधर उधर दौड़ाया। सब व्यर्थ। सावन भादों में दूज के चांद के जैसे कुमार का कहीं पता न लगा। रंग में भंग हो गया। सभी दुःखी हो गये। गुणचन्द्र पागल सा बेचैन हो गया। जल बिना मछली के जैसे छट पटाने लगा।

सेठ लक्ष्मीदत्त अपने मन में पश्चात्ताप करने लगे। आंखों में आंसू भर भरकर कहने लगे अरे! मैं बड़ा अभागा हूं। मैंने व्यर्थ ही बेटे को दुःखी किया। चूभती हुई बात कह दी। हे बेटा! तू मुझे माफ कर दे, जहां कहीं हो जहां से चला आ । अरे! मैंने वीणारव से उसके दान किये रथ घोड़े मूल्य देकर वापस लेने के लिये जोर दिया, यह अच्छा नहीं किया। मेरे इसी कार्य से वह रुष्ट होकर कहीं चला गया। अब मैं क्या करू? कहां जाऊं? मेरा बेटा मुझे कहां मिलेगा? हायरे! मेरा लोभ। इस प्रकार सेठ ने विलाप और प्रलाप किये।

पुत्र वियोग से दुःखी हुई सेठानी भी अपनी आंखों से बार-बार जितने आंसू गिराती हुई विलाप करती हुई कहती है हाय आज दिन तक मेरे जिस बेटे ने मुंह से कभी कुछ नहीं मांगा था, उसी ने कल मेरे से लड्डु मांगे, और अपने कुटुम्बियों में बांट कर स्वयं भी कुछ खाये। उस समय इस बात को मैं न समझ पाई कि मेरा लाल मेरी आंखों का तारा, हृदय का हार, श्रीचन्द्रकुमार मुझसे विदाई लेकर कहीं जा रहा है। अरे बेटा? मुझे छोड़के कहां गया रे!! इस तरह से सेठानी ने भी बेहद दुःख किया।

जिस प्रकार पानी में पड़ा हुआ तेल, दुष्ट को कहीं हुई गुप्त बात, एवं पात्र में दिया हुआ दान अपने आप फैल जाता है, उसी तरह कुमार के एकाएक कहीं गुम हो जाने की बात भी सारे नगर में फैल गई। राजकुल में भी उसकी चर्चा हुई। महारानी और महाराजाने भी सुना। सर्वत्र व्याकुलता छा गई। सेठ लक्ष्मीदत्त ने अपने आदमियों को भेज कर पुत्र वधु पद्मिनी चन्द्रकला को राजकुल से बुलवाया। महारानी की आज्ञा लेकर वह अपने ससुराल में आ गई। उससे भी पूछताछ हुई। गुणचन्द्र ने कुछ संकेत पा लिया। पर उसने उस संकेत को हितैषी होने के नाते गुप्त ही रखा।

इधर महाराज प्रतापसिंह ने श्रीचन्द्रकुमार की खोज में सभी ओर अपने सिपाही भेजे। उन्होंने देश का कोना २ छान लिया, मगर वे कुमार को कहीं भी न पा सके। तीन दिन तक सारी नगरी में शोक सा छा गया। न तो बाजार ही खुले, और न कोई व्यवसाय ही हुआ। सारे आमोद प्रमोद बंद हो गये। सबके चेहरे उदास और चिन्तित दिखाई देते थे।

सेठ के घर की तो क्या बतायें ? सारे घर में शोक का साम्राज्य था। सब चित्र लिखित से बैठे थे। आहों और सिसकियों के सिवाय कहीं से कोई आहट तक नहीं सुनाई देती थी। न खाने का पता था, न पीने का। सभी कुमार के वियोग सागर में डुबकियां लगा रहे थे। स्थल पे पड़ी मछली के जैसे सब तड़प रहे थे। इसी अवस्था में रोते बिलखते और शौच करते उनको तीन दिन बीत गये।

चौथे दिन कुशस्थलपुर नगर में धर्मघोष नाम के कोई ज्ञानी गुरू पधारे। वनपालक ने महाराजा को बधाई दी। महाराजा और महारानी अपने परिवार के साथ गुरू —वंदना के लिये पहुँचे। लक्ष्मीदत्त, लक्ष्मीवती, पद्मिनी, चन्द्रकला आदि और भी कई धर्म प्रेमी नागरिक गुरु दर्शन-वन्दन के लिये गये। विनय-विधि से सबने श्रीगुरु महाराज को वंदन किया मुनिराज ने सबको बड़े उदात्त भाव से धर्मलाभ दिया। सभी गुरु दर्शन से आत्मा को कृत-कृत्य मानते हुए गुरु वचनामृत का पान करने की उत्कण्ठा से यथास्थान बैठ गये। गुरु ने आत्मवाद और कर्मवाद की धर्मकथा कही।

उन्होंने कहा जो कर्मों को करता है वही उन कर्मफलों को भोगता है। भव-संसार में होने वाले भावों का कर्म ही एक मात्र हेतु है जो भाग्यशाली कर्मों का क्षय कर देता है उसी का मोक्ष हो जाता है।

क्या राजा क्या रंक संसार में सभी अपने कर्मों से सुख दुःख भोगते हैं। अतः अयभव्यात्माओं ! आत्मा का ख्याल करके कर्मों पर काबू प्राप्त करो। कर्म को धर्मरूप में परिणत करने वाले धर्मात्मा धन्य होते हैं।

सद्गुरु देव के उपदेश को सुनकर महारानी सूर्यवती ने हाथ जोड़कर बड़े नम्र-शब्दों में गुरु से पूछा—भगवन् ! जयकुमार के भय से सद्य उत्पन्न मेरे पुत्र-रत्न को बगीचे में फूलों के ढेर में छिपा दिया था। बाद में ढूंढने पर भी वह नहीं मिला, उसका मुझे बड़ा दुःख है। आप ज्ञानी हैं अतः कृपा कर बताइयें कि उसका क्या हुआ?

रानी की प्रार्थना पर उपयोग लगाकर दयालु-ज्ञानीगुरु ने सबके सामने कहना शुरु किया-महाभागे! ये सब पूर्वकृत कर्मों के ही खेल हैं। तुम्हारा पुत्र बड़ा भाग्यशाली है। तेजस्वियों में शिरोमणि है। तुम्हारे गोत्र-देवता ने ही उसका और तुम्हारा परम हित देखकर जिस रोज कुमार का जन्म हुआ था,

उसी रात्रि में सेठ लक्ष्मीदत्त को स्वप्न में आदेश दिया कि– तुमको राजा के उद्यान से प्रातःकाल में फूलों के ढेर में सुरक्षित एक नव-जात शिशु मिलेगा, उसे ले आओ। सेठ ने वैसा ही किया। सेठ के लड़का न था, अतः उसी को अपना लड़का मानकर जन्मोत्सव मनाया।

उसी बालक के पुण्य प्रताप से सेठ लखपति से करोड़पति बन गया। सेठानी लक्ष्मीवती ने भी बड़े हर्ष से अपने पुत्र के अभाव में उसी को मेरे गूढ़ गर्भ था की – बात प्रचारित करके अपने पुत्र की तरह ही लालन-पालन किया। तुम्हारे द्वारा श्रीचन्द्र नामवाली अंगुठी जो कुमार के पास रखी थी उसी के आधार पर उन्होंने भी उसी सुन्दर श्रीचन्द्र नाम को पसंद किया। कुटुम्बियों के सामने समारोह के साथ उसका श्रीचन्द्रकुमार नाम रख दिया।

महाराज? एक समय आपने उसे गोदी में लेकर क्या पुत्र-सुख का अनुभव नहीं किया था? क्या आपकी स्नेह भरी दृष्टि उसी पुत्र स्नेह के कारण श्रीचन्द्र के मुख पर नहीं गिरी थी?। महाराज लक्ष्मीदत्त सेठ के घर बड़ा होने वाला अद्‌भुत चरित्रों वाला कुमार श्रीचन्द्र आपका ही तो चिरंजीवी है ? उसका चरित्र सारे देश में प्रसिद्ध है। इस विषय में सेठ लक्ष्मीदत्त और उनकी धर्मपत्नी साक्षी हैं। दान देने के सम्बन्ध में सेठ से कुछ मन मुटाव हो जाने के कारण ही वह इस समय अपने भाग्य के भरोसे विदेश-यात्रा में गया हुआ है। घबराइयें नहीं वह इसी वर्ष राजाधिराज होकर आप लोगों को आ मिलेगा। इसमें कोई संदेह नहीं।

इस प्रकार ज्ञानी-गुरु के वचनामृत से परमानन्द को पाये हुए महाराजा और महारानी बहुत ही प्रसन्न हुए। सेठ सेठानी ने भी बड़े विनीत भाव से श्रीगुरुदेव की बात को स्वीकार किया इस पर महाराजा और महारानी ने उन दोनों को खूब सराहा। उनके साथ पहिले प्रेम तो था ही अब और भी ज्यादा बढ़ गया। गुरू महाराज के फरमाने से नैमित्तिक के वचन को सत्य-सिद्ध माना।

उस समय वहां उपस्थित बन्दी जनों ने विद्वानों ने और कवियों ने श्रीचन्द्र का खूब ही यशो-वर्णन किया।

नरसिंह-कुलादित्य-प्रतापसिंह भूप-भूः।
जीयात् सूर्यवती सूनुः-श्रीचन्द्रो जगतीतले।।

अर्थात्— नरसिंह के कुल में सूर्य के समान प्रतापी महाराजा प्रतापसिंह से उत्पन्न होने वाले श्री सूर्यवती के पुत्र श्रीचन्द्रकुमार इस पृथ्वी पर चिरंजीवी रहो।

लोगों के मन की बड़ी भारी भ्रान्ति के मिट जाने से लोगों में एक अनुपम उल्लास की लहर दौड़ गई। गुरुदेव को नमस्कार कर सब लोग अपने घरों को लौट गये। महाराज-प्रतापसिंह ने अपने पुत्र की खबर पाकर नगर में भारी उत्सव मनाया। महारानी सूर्यवती ने जिस गंध-हस्ती को अपने पुत्र के लिये छांट कर रखा था उसे यह श्रीचन्द्र का पट्ट—हाथी है ऐसा निश्चित कर दिया। पद्मिनी चन्द्रकला कभी महाराज के यहां, तो कभी सेठ के यहां, तो कभी श्रीपुर में रात दिन धार्मिक कृत्यों को करती हुई पति-विरह के दुःखमय समय को बिताने लगी। कहा भी है—

धर्म धनार्थियों को धन, कामाभिलाषियों को काम सौभाग्य चाहने वाले को सौभाग्य, पुत्र की कामना करने वालों को पुत्र देने वाला होता है। इसी तरह से राज्य चाहने वालों को राज्य भी देता है। अथवा तरह-तरह के संकल्प विकल्पों से क्या? धर्म क्या नहीं कर सकता है? सब कुछ कर सकता है यावत् स्वर्ग और अपवर्ग-मोक्ष दोनों का भी देनेवाला होता है।

जननी जणे तो भक्त जण कां दाता कां शूर।
नहीं तो रहिजे वांजणी मती गमावे नूर।।

हे मां! अगर संतान पैदा करनी है तो भक्त संतान पैदा करना, चाहे तो दानवीर सन्तान पैदा करना, चाहे वीर सन्तान पैदा करना। जैसी तैसी सन्तान पैदा करके नूर गमाने से तो अधिक अच्छा हो कि तू बांझ बनी रहे।

रोकर रोटी मांगने वाली संतान के मां-बाप संसार में इज्जत नहीं पाते। भक्तों की दानवीरों की, और शूरवीरों की संसार में महिमा गाई जाती है, और उन्हीं के पूर्वजों के नाम भी स्वर्णाक्षरों से इतिहास में कथाओं में और गीतों में गाये जाते हैं। श्रीचन्द्रकुमार भी अपने चरित्र से भक्तों की दान वीरों की और शूर वीरों की कोटि में नाम लिखाने वाला था। वह बैठकवाई या वेटु नहीं था तेजीको ताजणे के समान सेठ लक्ष्मीदत्त की बातों ने उसकी तेजी में चार चांद लगा दिये।

पद्मिनी चन्द्रकला की आज्ञा पाकर घर से निकलने के बाद वह स्वेछा से स्वतन्त्रता पूर्वक पृथ्वी में पर्यटन कर रहा था। कभी कोसों तक पैदल ही चलता जाता था तो कभी सवारी द्वारा। कभी दिन में, चलता था

तो कभी रातमें वह शेर की भांति निर्भयता पूर्वक विचरता था। पंच परमेष्ठी महामंत्र के जाप से, योगी से प्राप्त औषधि द्वारा और अपने प्राचीन पुण्यों के प्रभाव से वह सुरक्षित था।

भोजन में उसकी यह विशेषता थी कि एक सोना मोहर देकर वह किसी बनिये की दुकान पर भोजन करता था। भोजन के मूल्य से अगर अधिक पैसे निकलते थे तो, वह लेता नहीं था। अकेला भोजन नहीं करता था। उसका नित्य नियम था कि पांच सात मनुष्यों को जिमा कर ही वह जीमता था। कहीं किसी दीन हीन दुःखी को देखता तो गुप्त रूप से उसकी भरसक मदद करता था। और एक दिन चलते-चलते रात हो गई। आस-पास किसी बस्त का आसार न देख कुमार ने उसी जंगल में रात बिताने की ठानी। वह एक वृक्ष पर चढ़ गया। चारों तरफ छिटकी हुई चांदनी को देखने लग। वह टकटकी लगाए शारदीय शशि की शोभा को निहार रहा था कि सहसा उसके मुंह से निकल पड़ा—

नक्षत्र रूपी अनेक आभूषणों को पहलने हुए, बादलों के हटजाने से चन्द्रमा रूपी मुख को स्पष्टतया प्रकट करती हुई, चांदनी रूप दुपट्टा धारण की हुई यह रात्रि रूप बाला, प्रमदा की तरह दिन व दिन बढ़ रही हैं।

उस समय अचानक उसका ध्यान पृथ्वी पर चलती हुई कोई छायामात्र मनुष्य की तरफ आकर्षित हुआ। उसने मन में सोचा कि यहां साधारण तथा मनुष्य नहीं आ सकते है! हो न हो यह कोई सिद्ध पुरुष ही है। हैं! यह बोझा लादकर कहां जा रहा है इसे जरूर ज्ञात करना चाहिए। अतः कुमार ने उसके पीछे-पीछे चलना शुरू कर दिया, पर गुप्त-गुप्त जिससे उसे कुछ भी मालुम न पड़े।

क्रमशः

समाचार-सार

जबलपुर—ग्राम बिलहरी से पार्श्वनाथ मन्दिर के निर्माण के समय भूगर्भ से १४ मूर्तियों प्राप्त हुई। इन मूर्तियों को देखने से लगता है कि बिलहरी ग्राम में जैन वैभव की अपार सम्पदा छुपी हुई है। तकरीबन ४ से ५ फुट की भगवान् आदिनाथ की प्रतिमा सहसा ही अपनी और आकर्षित करती है। भगवान् पार्श्वनाथ की प्रतिमा, युगल तीर्थंकर की प्रतिमा (खड़गासन), समवशरण सहित तीर्थंकर की प्रतिमा, सिद्ध भगवान् की प्रतिमा हित १४ प्रतिमायें प्राप्त हुई है, जिन्हें अभी मंदिर के परकोटे में ही रख दिया गया है निकट भविष्य में इन प्रतिमाओं की प्रतिष्ठित किये जाने की योजना है।

शौरीपुर में नेमिनाथ भगवान् का जन्म कल्याणक महोत्सव--भगवान् श्री नेमिनाथजी की च्यवन एवं जन्मधरा श्री जैन श्वेताम्बर तीर्थ, शौरीपुर, बटेश्वर (जिला आगरा) में श्रावण शुक्ला ५-६ को २२वें तीर्थंकर श्री नेमिनाथजी का जन्म कल्याणक उत्सव तीर्थ कमेटी की ओर से बड़े उत्साह के मनाया गया।

कन्डेक्टर की सीट

सेठ ने अपने घर पर एक धार्मिक कार्य के निमित प्रीतिभोज का आयोजन किया। भोजन में सेठ ने नाना प्रकार की स्वादिष्ट मिठाई आदि के साथ-साथ कई प्रकार की पूरी और पकवान बनाये।

सेठ के इस प्रीतिभोज में सम्मलित होने के लिये नगर के प्रतिष्ठित नागरिकों के साथ हर तबके के लोग आये। स्वादिष्ट एवं गरिष्ठ भोजन कर लोग सेठ को अच्छे भोजन की प्रशंसा कर अभिनन्दन कर विदाई लेते हुए वापिस जा रहे थे। सेठ भी आगन्तुकों का अभिवादन स्वीकार कर बड़े हर्षित हो रहे थे।

सेठ के प्रीतिभोज में आने वाले अतिथियों को सेठ एवं उनकी पत्नी दोनों मिलकर भोजन करवाने में व्यस्त थे। सेठ सेठानी एक-एक व्यक्ति की थाली पर पहुंचते और मनवार करते रहते। सेठ सेठानी की स्वामी भक्ति देखकर लोग प्रशंसा किये बिने नहीं रहते।

भोजन की पंक्ति में एक व्यक्ति बड़े चाव एवं इतमिनान से भोजन कर रहा था। उसने प्रारम्भ में सेठ के यहां बनी नाना प्रकार की मिठाईयां जमकर खाई। उसकी थाली में मिठाईयों का दौर चल रहा था कि इसके साथ भोजन करने बैठे अन्य व्यक्ति भोजन समाप्त कर उठते जा रहे थे। मात्र ये सज्जन अभी मिठाईयों के दौर में गुजर रहे थे। इसने अपनी पंक्ति की तरफ नजर दौड़ाई तो पंक्ति में कोई व्यक्ति भोजन करता नजर नहीं आया। तब इसे कुछ शर्मिन्दगी आई और भोजन में पूरी पकवानों का दौर आरम्भ किया।

सज्जन दो दर्जन से अधिक पूरियां खा चुके थे और अब पूरी खाने को उनका मन नहीं हो रहा था। इसी बीच सेठ पूरी की मनवार करने इनकी थाली पर पहुंचे तो इसने बड़े स्नेह के साथ पुड़ी लेने को मनाई कर दी और कहा सेठजी अब तो पेट में जगह भी नहीं है। यदि आपकी मनवार लूंगा तो मेरे को उल्टी हो जायेगी। सेठ ने पूरी खाने पर अधिक जोर नहीं दिया और आगे अन्यों को पूरी परसने के लिये चल दिये।

सेठ कछ कदम ही आगे चले होंगे कि सेठानी पंक्ति में आगे बैठे इसी सज्जन को मनवार करने पहुँच गई। सेठानी गुलाब जामुन की मनवार कर रही थी। भोजन करने वाले सज्जन ने सेठानीजी की मनवार को नहीं

ठुकराया तब सेठानी ने दो गुलाब जामुन रख दिये। यह दृश्य सेठ ने देख लिया और मुड़कर सज्जन की थाली पर आये। तब तक इन महाशय ने दोनों गुलाब जामुन को अपने पेट में उतार दिया।

सेठ ने सज्जन से कहा भाई जब मैं पूरी की मनवार करने आया तो आपने फरमाया कि पेट में जगह नहीं है और यदि एक पूरी और रखा ली तो उल्टी हो जायेगी। लेकिन अभी आपने सेठानी की मनवार में रखे दो गुलाब जामुन खा लिये। क्या इससे आपको उल्टी नहीं होगी।

भोजन करने वाले सज्जन ने कहा-सेठजी-आप जानते है कि यदि सड़क पर यात्रियों को लेकर चलने वाली बस में यात्रियों को ठूस-ठूसकर भर देने के बाद भी बस का कन्डेक्टर अपनी जगह बना लेता है, बस! गुलाब जामुन बस कन्डेक्टर का रूप बनाकर अपनी जगह बना लेगा। सेठ भोजन भट सज्जन का जवाब सुनते ही रह गये।

भूरचन्द जैन
जूनी चौकी का वास, बाड़मेर (राजस्थान)

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2220-8105/2139,(Resi) 2329-0629/0319

NAHAR
5/1, A.J.C. Bose Road, Kolkata - 700 020
Ph: (O) 2247-6874, (Resi) 2246-7707

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
Azimganj House
7, Camac Street, Kolkata - 700 017
Ph: 2282-5234/0329

ARIHANT JEWELLERS
Shri Mahendra Singh Nahata
M/s BB Enterprises
8A, Metro Palaza, 8th Floor 1,Ho Chi Minh Sarani,
Kolkata - 700 071
Ph: 2288 1565 / 1603

CREATIVE LIMITED
12, Dargah Road, Post Box:16127,
Kolkata -700 017
Ph: (033) 2240-3758/1690/3450/0514
Fax: (033) 2240 0098, 2247 1833

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
93/4 Karaya Road, Kolkata - 700 019
Ph: (O) 2220 8967, (Resi) 2247 1750

MAHASINGH RAI MEGH RAJ BAHADUR
Goalpara, Assam

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata - 700 020, Ph: (Resi) 2455-3586

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Kolkata - 700 016
Ph: 2226-2418, (Resi) 2475-2730, 2476-8730

GAUTAM TRADING CORPORATION
32, Ezra Street, Kolkata - 700 001
6th Floor, Room No - 654
Ph: (O) 2235 0623, (Resi) 2239-6823

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road,
Kolkata - 700 007
Ph: 2238-8677/1647, 2239-6097

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2348-8576/0669/1242
(Resi) 2225-5514, 2237-8208, 2229-1783

APRAJITA
Air Conditioned Market
Kolkata - 700 071
Ph: (O) 2282-4649, (Resi) 2247-2670

ASHOK KUMAR RAIDANI
6, Temple Street, Kolkata - 700 072
Ph: 2237-4132, 2236-2072

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue, Kolkata, Ph: 2464-1186,

SURANA MOTORS PVT. LTD.
84 Parijat, 8th Floor,
24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071
Ph: 2247-7450/5264

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments &Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 2238-4755, (Resi) 2238-0817

APARAJITA BOYED
Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106
Ph: 2665-3666/2272
e-mail: Suravee@cal2.vsnl.net.in
sona@cal3.vsnl.net.in

B.W.M.INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph: (O) 05414-25178, 25779, 25778
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151-202256 (Bikaner)

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani
Kolkata - 700 007
Ph: Gaddy- 2233-1766, 2238-8846
Mobile: 9831028566
Resi : 2355-9641/7196

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001
Ph: (B) 2220-2074/8958 (D) 2220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2220 9755
Resi: 2464-3235/1541, Fax: (033) 2464 0547

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: 2282-8181

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
C/o Shri P.K. Doogar,
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Kolkata - 700 007,
Ph: 2239-1408

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
203 /1 M. G. Road, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 2238-9356/0950 (Fact). 2557-1697/7059

COMPUTER EXCHANGE
Park Centre' 24 Park Street
Kolkata - 700 016, Ph: 2229-5047/9110

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001
Ph: 2248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment
15/1 Chakrabaria Lane,
Kolkata - 700 026, Phone : 2476-1533

MUSICAL FILMS (P) LTD
9A, Esplanade East
Kolkata - 700 069

ABL INTERNATIONAL LTD.
1, Shakespeare Sarani, Kolkata - 700 071.
Ph: 2282-7615/7617/2726, Gram : Sudera

SHIV KUMAR JAIN
"Mineral House"
27A, Camac Street, Kolkata - 700 016
Phone : (Off) 2247-7880, 2247-8663
(Res) 2247-8128, 2247-9546

PRADIP KUMAR LUNAWAT
P-44 Dr. Sundari Mohan Avenue
Kolkata - 700 014, Phone : 2249-0103

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road
Kolkata - 700 001 Ph: 2235-2076, 2235-5701

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4
Kolkata - 700 071, Ph: 2229 6256/8730/1029
Resi: 2247 6526/6638/22405126
Telex: 2021 2333, ARBI IN, Fax : 2226 0174

DR. NARENDRA L. PARSON & RITA PARSON
18531 Valley Drive
Villa Park, California 92667 U.S.A.
Phone : 714-998-1447714998-2726,
Fax : 7147717607

SPACE & WINGS
Travel Agents
Domestic & International Airlines
Phone : 2242-7806/8835/5852
10, Dr. Rajendra Prasad Sarani (Clive Row)
1st Floor, Kolkata - 700 001 Fax : 2242 8831
P.S.A. Biman Bangladesh Airlines

RAJIB DOOGAR
305, East Tomaras Avenue
Savoy, IL 61874-9495
USA
Phone : 001-217-355-0174/0187
e-mail : doogar@uiuc.edu

SUBHASH & SUVRA KHERA
6116, Prairie Circle
Mississauga LS N5Y2
Canada
Phone : 905-785-1243

M/S. SARAT CHATTERJEE& CO. (VSP) PVT. LTD.
Regd Office 2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)
2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 700 001
Ph: 2220-7162, 2261-0540, Fax : (91)(33)2220 6400
e-mail: sccbss@cal2.vsnl.net.in

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H. M. T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Kolkata - 700 007 (Phone : 2239-7607)

अ angan
Rajasthan Village Theme Resturant at Swabhumi
89/c, Narkeldanga Main Road, Kolkata - 700 054
Phone : 2359 2031, e-mail : www.jiggis.com

PRITAM ELECTRIC & ELECTRONIC PVT. LTD.
Shop No. G- 136, 22, Rabindra Sarani,
Kolkata - 700 073, Phone : 2236-2210

MAHENDRA TATER
147, M. G. Road
Kolkata - 700 007, Phone : 2227-1857

RABINDRA SINGH NAHAR
40/4A, Chakraberia South, Kolkata - 700 020
Phone : (O) 2244-1309, (R) 2475-7458

जो हिंसात्मक प्रवृत्ति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

VEEKEY ELECTRONICS
Madhur Electronics, 29/1B, Chandani Chowk
3rd floor, Kolkata - 700 013
Ph: 2352-8940/334-4140
(Resi) 2352-8387/9885

MAUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrellas
45, Armenian Street, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 2242-4483/9181, (O) 2238-1396/1871
Fax : 2231-2151, 2666-6013

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
D. C. Group Pvt. Ltd, Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Kolkata - 700 007
Phone : 2220-5229/5121

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Kolkata - 700 007, Phone : (033)2230-1329, 2232-1033
Fax : 91-33-2302413

ELECTO PLASTIC PRODUCTS PVT. LTD.
22 Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 2236-3028, 2237-4039

KRISHNA JUTE COMPANY
Jute Broker & Dealer
9, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-0874/9372, 2221-0246

LILY SUKHANI
7, Bright Appartment, 7 Bright Street
Flat No. 7 C., Kolkata - 700 019
Phone : 2287-0448

M/S. SETHIA OIL INDUSTRIES LTD.
Manufactureres of De oiled cakes & Refined oil.
Lucknow Road, PO. Sitapur - 261001 (U.P.)
Phone: 05862/42017/42073

M/S. SHREE SILK STORE
House of :
Banarasi Sarees & Velvet Articles etc.
P-25, Kalakar Street, Jain Katra
Kolkata - 700 007
Phone: 2268 2671, 666 4422

SAROJ DUGAR
Fancy saree, bed covers
34/1J. Ballygunge Circular Road
Kolkata - 700 019, Phone: 2475 1458

M/S. POLY UDYOG
Unipack Industries
Manufacturers & Printers of HM; HDPE,
LD, LLDPE, BOPP PRINTED BAGS.
31-B, Jhowtalla Road
Kolkata - 700 017, Phone: 2247 9277, 2240 2825
Tele Fax: 22402825

M/S. B.C. JAIN JEWELLER'S (PVT.) LTD.
Govt. approved valuer for Jewellery.
Director: Bimal Chand Jain/Vikash Jain/Vivek Jain
39, Burtolla Street, Kolkata - 700 007

DHANDHIA BROS
6/1 Hara Prasad Dey lane, Kolkata - 700 007
Phone: (R) 2239-6241/2950 (O) 2239-0581

M/s. MUKUND JEWELLERS
manufactures of American Diamand
Jewellery, Gold & Silver Goods &
Dealers in imitation Jewellery
P-37A, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone: 2232 3876

SHRI MANILAL RAJENDRA KUMAR JAIN (DUSAJ)
Dealers : Diamond, Precious Stones, Semi Stones &
Readymade Ornaments,
Phone: 2237 5869/6476
(Mobile): 98301017091, 9830142191

DEEPAK KUMAR SANDEEP KUMAR NAHATA
Dealers in Diamond
Manufactures of Precious & Semi Precious Ornaments
Burtala, Kolkata - 700 007,
Phone: (G) 2238-0900 (M) 9830094325

BADALIA GEMS PVT. LTD.
BADALIA HOUSE
66/3, Beadon Street, Kolkata - 700 006
Phone: (O) 2554-8999/8997 (R) 2533-9985,
Fax : 033 5548999, e-mail : shashibadalia@usa.net

M/S. BEEKAY VANIJYA PVT. LTD.
City Centre
19, Synagogue Street
5th Floor, Room No. 5342535
Kolkata - 700 001
Phone: 2210-3239, 2232-0144, 2238-7281
Fax: 033-2210-3253 (M) 9831001739
e-mail : bktarfab@satyam.net.in

WHILE PURCHASING HEASIAN, SACKING, YARN AND DECORATIVE FURNISHING FABRICS & OTHER JUTE PRODUCTS, PLEASE INSIST ON QUALITY PRODUCTION.

We are, always ready to meet the Exact type of your requirement.

AUCKLAND INTERNATIONAL LTD.

(UNIT : AUCKLAND JUTE MILLS)

"KANKARIA ESTATE"

6, Little Russel Street,
Kolkata - 700 071

A RECOGNISED EXPORT HOUSE

Cable : SWANAUCK, KOLKATA
Telex : 212396 AUCK IN
Codes : BENTLEY'S SECOND
Phone: 22479921/9720,22402683

Registered Office &
'JUTE MILL' at jagatdal 24-Parganas
BHATPARA 81-2757/2758/2038

ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध, अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

KUSUM CHANACHUR

Founder: Late Sikhar Chand Churoria

Our Quality Product of Chanachur.
Anusandhan , Raja,
Rimghim, Picnic,
Subham, Bhaonagari Ghantia,

卐

Manufactured By
M/s. K. C. C. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Pin - 742122
Dist: Murshidabad
Phone: Code: 03483 No.: 53232
Cal. Phone: No.: 033 2230 0432, 2522-1580

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of pumping stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in place where Columbus would have feared to tread)

SPML

Engineering Life

SUBHASH PROJECTS & MARKETING LIMITED

113 Park street, Kolkata 700 016
Tel : 2229 8228, Fax : 2229 3882, 2245 7562
e-mail : info@subhash.com, website: www.subhash.com
Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Kolkata-700016 Ph:(033)2229-8228.
Registered Office: Subhash House, F-27/2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi-110 020
Ph: (011) 692 7091-94, Fax (011) 684 6003. Regional Office: 8/2 Ulsoor Road,
Bangalore 560-042 Ph: (080) 559 5508-15, Fax: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region, braving temparature of 50^0 C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump-houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
अर्थात् अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

Phone:

Gram "GANGJUTMIL" 2226-0881
Fax: + 91-33-245-7591 2226-0883
Telex: 021-2101 GANG IN 2226-6283
2226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 2634-6441/2644-6442
Fax: 2634 6287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College, Kolkata

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.
(Formerly: Laxman Singh Jariwala)
Balwant Jain - Chairman

卐

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 2514-4496, 2513-1086, 2513-2203
Fax: 91-011-5131184
e-mail: laxmanjariwala@gems.vsnl.net.in

With Best Compliments..... ?

MARSON'S LTD

MARSON'S THE ONLY TRANSFORMER MANUFACTURER IN EASTERN INDIA EQUIPPED TO MANUFACTURE 132 KV CLASS TRANSFORMERS

Serving various SEB's Power station, Defence, Coal India, CESC, Railways, Projects Industries since 1957.

Transformers type tested both for Impulse/Short Circuit test for Proven desing time and again.

PRODUCT RANGE

Manufactures of Power and Distribution Transformer
From 25 KVA to 50 MVA upto 132kv lever.
Current Transformer upto 66kv.
Dry type Transformer.
Unit auxiliary and stations service Transformers.

18, PALACE COURT
1, KYD STREET, KOLKATA - 700 016
PHONE: 2229-7346/4553, 2226-3236/4482
CABLE-ELENREP TLX-0214366 MEL-IN
FAX-00-9133-225948/2263236

शुभ कामनाओं सहित —

मनुष्य जीवन में ही सत्य कार्य करने का अवसर उपलब्ध होता है।

अहिंसा अमृत है, हिंसा विष है।

अनाम

In

Loving Memory of their parents

Late, Shree Phool chandji Kharad

&

Late, Smt. Narangi Devi Kharad

From :-

M/s Phool Chand Kharad & Sons

21, Kali Krishna Tagore Street

Kolkata - 700 007

Phone : 2233-1609, 2239-8628

M.M. & P.O./W.B./R.N.P.–45/2003
VoL. XXVII. NO. 6. TITTHAYARA September 2003
Registered with the Registrar of Newspapers for India
under No. 30181/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचानी चाहिये।

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3 Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 2666 7212/7225